६० वर्षों से ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविनोद को प्रकीर्ण करनेवाली विशिष्ट पत्रिका

TEST YOUR IQ
Which type of mosquitoes eat other mosquitoes?
A 11th century temple has no deity, no idol, no worship! Where is it located?
A temple archway has the tales from the Panchatantra sculpted on it. Where will you go to see them?
Which dog lived the longest in history?
Who or which will you associate with when you are told about Fragania?
Someone cut off his right hand with his left hand and went for his last battle (against the British army). Who was it?
Where is Asia's largest Rose Garden located?
What is the difference between Julemanden and Joulupukki?
If you feel you are stumped, don't worry, you'll get all the answers in Junior Chandamama December 2006 issue. Go, grab a copy!
Junior
CHANDAMAMA
THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE
NOW AVAILABLE AT YOUR NEAREST NEWS STAND FOR
RS.15 PER COPY
PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30
For Further Details write to :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
82, Defence Officer's Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
Junior
CHANDAMAMA
THE LEGEND BEHIND THE CHRISTMAS TREE
STORIES AND ACTIVITIES SPECIALLY CREATED FOR CHILDREN BELOW 8 YEARS

निकालो अपनी तलवार
चिकुनगुन्या और
डेंगू के दानव को दो मार

क्या तुम जानते थे कि मच्छरों को उनके नामों से जाना जाता है?

एडीज* मच्छरों से मिलो – इनसे दो अपंगकारी बीमारियाँ होती हैं जो बच्चों, स्त्रियों तथा पुरुषों– युवा तथा वृद्ध, सबका समान रूप से अंगभंग कर रही हैं।

*एडीज एजिप्टी – मच्छर की एक जाति है जो विषाणु को फैलाती है।

यह तुम्हारी अपनी 'रक्षा करने' का संग्राम है !

१. इस ड्रेस कोड का पालन करो: पूरी आस्तीन के वस्त्र पहनो और शरीर को खुला न रखो।

२. यदि मच्छर भगानेवाली क्रीम से एलर्जी नहीं हो तो शरीर के किसी खुले भाग पर उसे लगा लो।

३. मच्छरदानी के अन्दर सोया करो।

४. क्या तुम्हारे पास मछलीघर है? इसका पानी यथासंभव बदलते रहो, कम से कम २/३ दिनों में एक बार।

५. घर के बड़ों को याद दिला दो कि वे वाटर टैंक को तथा पात्र में जमा पानी को ढककर रखें।

६. दो दिनों से अधिक फ्रिज में पानी न रखो; बोतल को खाली कर अच्छी तरह साफ करो और ताजा पानी भरो।

७. अपने अध्ययन कक्ष/कार्यस्थल को साफ-सुथरा रखो। टूटी-फूटी पुरानी चीजों को निकाल फेंको। मच्छर यहीं पनपते हैं।

भारतीय बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर आपकी पत्रिका ने इसे प्रकाशित किया है।

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी और चक्रपाणि

पर्यावरण की रक्षा करें: अभी से जुट जायें!

पहले आया चिकुनगुन्या! फिर आ गया एक और अपंगकारी रोग-डेंगू। पिछले मई महीने से अब तक लगभग छः महीने हो गये, तब से ये दोनों चर्चा के विषय बने हुए हैं। हमें बताया गया है कि चिकुनगुन्या नाम अफ्रीकी देशों के एक वृक्ष से आया है जिसमें झुकाव आ जाता है। इस रोग के शिकार व्यक्ति भी एक चरण में आकर अधिक देर तक सीधे होकर चलने में असमर्थ हो जाते हैं। डेंगू को एक विषाणु ज्वर कहा जाता है। भारत में शोध के परिणामों तथा अनुसन्धानों को पढ़ने के बाद रोग का मूल कारण मच्छरों का काटना बताया गया है। एक द्विपक्षीय रणनीति को प्रयोग में लाया गया: मच्छरों को निर्मूल करना तथा उनकी वृद्धि को रोकना।

अन्त में निष्कर्ष यही निकलता है कि हमलोग स्वयं ही दोषी हैं- निकटतम परिवेश को गन्दा रखते हैं, अपने घरों में जंक जमा करते हैं तथा कूड़ा-कचरा के ढेर को सड़ने देते हैं। हम आधुनिक नगरों और शहरों के आस-पास गन्दी बस्तियों को भी बसते हुए देखते हैं जहाँ पानी जमा रहता है। जब कि ''चिकित्सा से बेहतर है रोकथाम''वाली कहावत केवल पुस्तकों में पढ़ने के लिए रह गई है, हम ''सरकार'' को कोसते रहते हैं; और सरकार कौन है? कोई और नहीं, हमारे ही द्वारा चुने गये प्रतिनिधि तो हैं।

हम सभी अपने कर्त्तव्य को याद रखें, अपने पर्यावरण को साफ रखें। हमें जानना चाहिये कि स्वच्छता न केवल निवासियों के चरित्र को प्रतिबिम्बित करती है बल्कि समुदाय के स्वास्थ्य की भी परिचायक होती है।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी और चक्रपाणि

पर्यावरण की रक्षा करें: अभी से जुट जायें!

पहले आया चिकुनगुन्या! फिर आ गया एक और अपंगकारी रोग-डेंगू। पिछले मई महीने से अब तक लगभग छः महीने हो गये, तब से ये दोनों चर्चा के विषय बने हुए हैं। हमें बताया गया है कि चिकुनगुन्या नाम अफ्रीकी देशों के एक वृक्ष से आया है जिसमें झुकाव आ जाता है। इस रोग के शिकार व्यक्ति भी एक चरण में आकर अधिक देर तक सीधे होकर चलने में असमर्थ हो जाते हैं। डेंगू को एक विषाणु ज्वर कहा जाता है। भारत में शोध के परिणामों तथा अनुसन्धानों को पढ़ने के बाद रोग का मूल कारण मच्छरों का काटना बताया गया है। एक द्विपक्षीय रणनीति को प्रयोग में लाया गया: मच्छरों को निर्मूल करना तथा उनकी वृद्धि को रोकना।

अन्त में निष्कर्ष यही निकलता है कि हमलोग स्वयं ही दोषी हैं- निकटतम परिवेश को गन्दा रखते हैं, अपने घरों में जंक जमा करते हैं तथा कूड़ा-कचरा के ढेर को सड़ने देते हैं। हम आधुनिक नगरों और शहरों के आस-पास गन्दी बस्तियों को भी बसते हुए देखते हैं जहाँ पानी जमा रहता है। जब कि ''चिकित्सा से बेहतर है रोकथाम''वाली कहावत केवल पुस्तकों में पढ़ने के लिए रह गई है, हम ''सरकार'' को कोसते रहते हैं; और सरकार कौन है? कोई और नहीं, हमारे ही द्वारा चुने गये प्रतिनिधि तो हैं।

हम सभी अपने कर्त्तव्य को याद रखें, अपने पर्यावरण को साफ रखें। हमें जानना चाहिये कि स्वच्छता न केवल निवासियों के चरित्र को प्रतिबिम्बित करती है बल्कि समुदाय के स्वास्थ्य की भी परिचायक होती है।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों का पन्ना

मैं १९६५ से लेकर *चन्दामामा* का पाठक हूँ। १९८४ से लेकर मैं *चन्दामामा* का रचयिता हूँ। उन दिनों संध्याकाल में मैं अपनी दीदी के साथ घर के आगे के चबूतरे पर बैठक*चन्दामामा* पढ़ा करता था, जिसे मैं अब भी भूल नहीं सकता। वह बड़ा ही सुखद अनुभव है। *चन्दामामा* में जब मेरी प्रथम कहानी प्रकाशित हुई थी, वह मेरे जीवन का मधुर क्षण था। *चन्दामामा* ने मुझे पाठक और रचयिता बनाकर पर्याप्त प्रोत्साहन दिया।

चन्दामामा का पठन हमारी संस्कृति को परिरक्षित करने के समान है। बीच में कुछ समय तक *चन्दामामा* का प्रकाशन रुक गया, तब लगा कि मानों प्रवाहित हो रही, ''जीवन्त नदी'' अचानक रुक गयी हो। भगवान की कृपा से अब वह जीवन्त नदी फिर से प्रवाहित हो रही है।

रामायण के काल में जब बालक राम ने*चन्दामामा* के लिए जिद की, तब महाराज दशरथ ने उसे दर्पण में चन्दामामा दिखाया और उसकी इच्छा पूरी की। आज यह जिद होती तो वे इस *चन्दामामा* को हाथ में रखते और उसे संतुष्ट करते । वह चन्दामामा आकाश का आकर्षण है तो यह *चन्दामामा* इस भूमि के लिए वरदान है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि हमारा यह *चन्दामामा* अपनी ज्योति फैलाता रहे और हमेशा अद्वितीय रहे। ***-रामानंद शर्मा, पटना***

मैं *चन्दामामा* पत्रिका को १९५६ से जानता हूँ। तब उसका दाम ६० पैसे था। वेताल, बोधिसत्व, मांत्रिक तथा पौराणिक कथाओं से यह भरी रहती थी। कितनी आकर्षक लगती थी! आज भी यही एकमात्र पत्रिका है, जो बालक-बालिकाओं के मनों को लुभाती है। पहले पहेलियाँ नहीं होती थीं। पर आज ये पहेलियाँ बच्चों के मस्तिष्कों को पैना करती हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। तब पृष्ठों की संख्या भी अधिक होती थी। शंकर के चित्र कितने आकर्षक लगते थे! ''चन्दामामा'' पत्रिका सदा अपनी आभा फैलाती रहे।

- बालकृष्ण, मेरठ

अगस्त की *चन्दामामा* पत्रिका देखकर बेहद खुशी हुई। क्योंकि अन्य शीर्षकों से बढ़कर कहानियों को प्रधानता दी गयी। इससे भी बढ़कर इस बात पर बड़ी खुशी हुई कि लंबे अर्से के बाद वीरा, सीताराम जैसे चित्रकारों के चित्रों को स्थान दिया गया।

- वै.गोपाल, एस.रवि, एस. श्रीदेवी, हैदराबाद
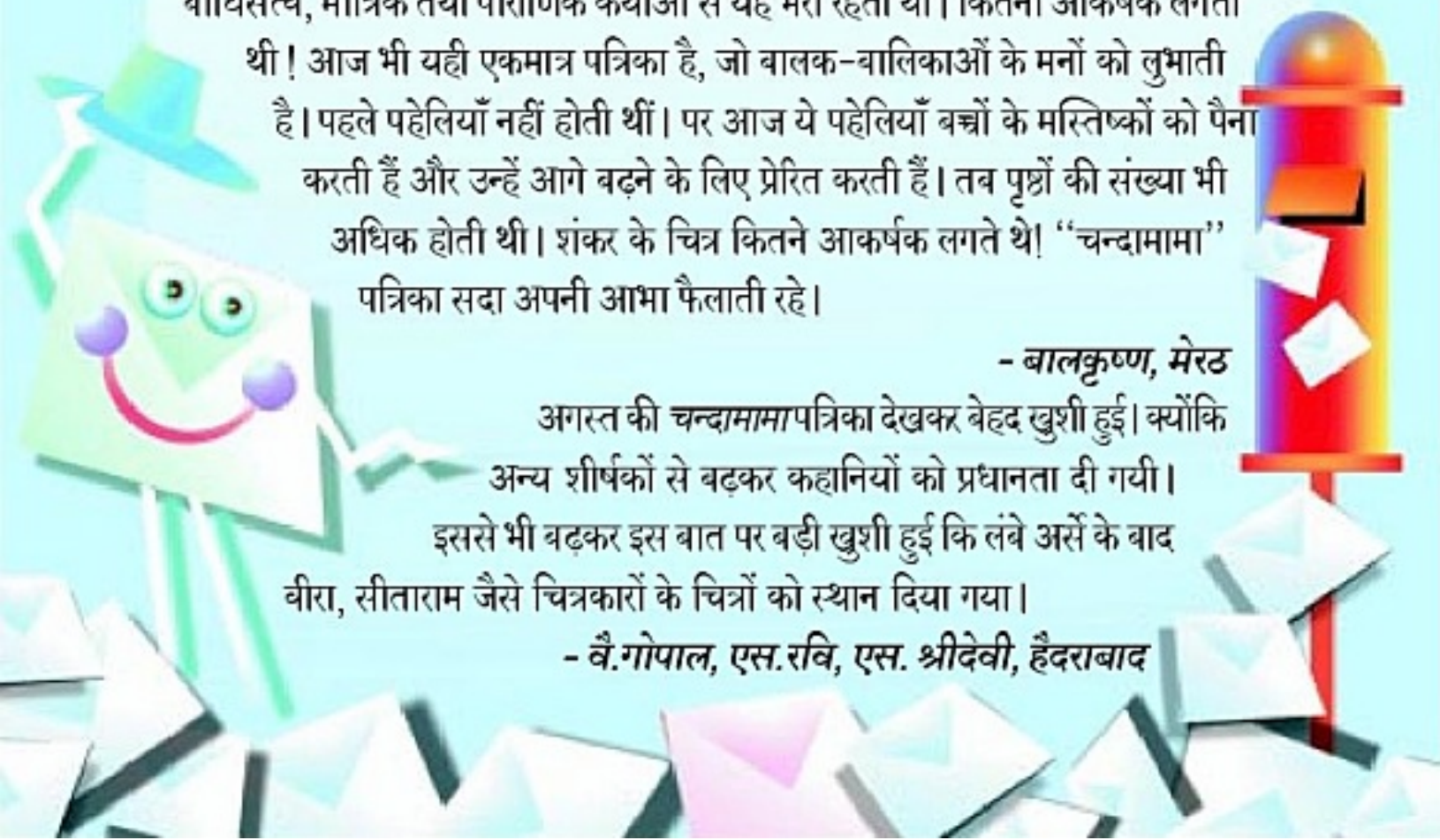
जिसके भाग्य में...

गंगा और रंगा पड़ोसी थे। वे पत्नियों के बनाये पापड़ों को शहर ले जाकर बेच आते थे। यह उनका पेशा था। उनकी आमदनी बहुत ही कम थी इसलिए उनकी पत्नियाँ हमेशा असंतुष्ट रहा करती थीं। और उन्हें कुछ न कुछ कहा करती थीं।

एक दिन गंगा की पत्नी गौरी ने कपड़े सुखाते हुए रंगा की पत्नी लक्ष्मी से कहा, ''भविष्य को लेकर सोचने मात्र से मुझे डर लगने लगता है। बड़ी मुश्किल से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। कल हमारी संतान हुई तो क्या करेंगे? घर कैसे संभालेंगे? खुद क्या खायेंगे और उन्हें क्या खिलायेंगे?''

''तुमने ठीक कहा गौरी। मैं भी इसी बात को लेकर बहुत चिंतित हूँ। हमारे पतियों को कहीं अच्छी नौकरी मिलेगी तो इस समस्या का हल हो जायेगा। नहीं तो हमें भविष्य में कई तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा।'' रंगा की पत्नी ने दर्द -भरे स्वर में कहा।

उन दोनों के बीच में अक़्सर ऐसी ही बातचीत होती रहती है। इन परिस्थितियों में उन्हें समाचार मिला कि जमींदार मनौती पूरी करने श्रीशैल मंदिर आनेवाले हैं और गाँव के बाहर ठहरनेवाले हैं। तड़के ही वे वहाँ से निकल पड़ेंगे, इसलिए उनसे मिलना हो तो रात के भोजन के पहले ही उनसे मिलना होगा।

''हमारे पति जमींदार के दर्शन करेंगे तो हो सकता है, उन्हें नौकरी मिले। ऐसा हो जाये तो हमारी सारी तक़लीफें दूर हो जायेंगी,'' गौरी व लक्ष्मी ने यों सोचा। दोनों ने अपने पतियों से कहा, ''रात को ज़मींदार से मिलिये और कोई नौकरी माँगिये।'' दोनों ने ज़ोर देकर कहा।

''पापड़ बेचने शहर जाकर शाम को लौट नहीं सकूँगा, इसलिए ज़मींदार के दर्शन नहीं कर पाऊँगा। अच्छा यही होगा कि आज शहर न जाऊँ।'' गंगा ने पत्नी से कहा।

लक्ष्मीकांत

लेकिन रंगा ने ऐसा नहीं सोचा। उसने निश्चय किया कि वह शहर जाकर जल्दी लौट आयेगा ताके वह भी जमीन्दार से मिल सके। इसलिए उसने पत्नी से कहा, ''गंगा ने कह दिया कि आज वह शहर नहीं आयेगा। मैं अकेला ही जाऊँगा और अंधेरा हो जाने के पहले लौट आऊँगा।'' कहकर पापड़ों की टोकरी सिर पर रखे रंगा शहर जाने निकल पड़ा।

रंगा ने शाम तक सारे के सारे पापड़ बेच डाले और गाँव लौटने निकल पड़ा। वह जल्दी ही गाँव लौटना चाहता था, जिससे वह भी जमींदार के दर्शन कर सके।

पर अचानक जोर की बारिश होने लगी। साथ ही घना अंधकार छा गया। जंगल में रास्ता स्पष्ट दीख नहीं रहा था। रास्ता भटक जाने पर विषैले साँपों और हिंसक पशुओं से बचना कठिन था।

यह सोचकर रंगा को डर लगने लगा। उसने चारों ओर नज़र फैलायी तो उसे देवी का उजड़ा हुआ एक मंदिर दिखायी पड़ा। वह जल्दी-जल्दी वहाँ पहुँच गया और भक्तिपूर्वक दोनों हाथ जोड़कर उसने देवी को प्रणाम किया।

इतने में एक मधुरस्वर सुनायी पड़ा, ''रंगा, कुशल पूर्वक हो?'' रंगा निश्चेष्ट रह गया और अपने को संभालते हुए पूछा, ''माते, तुम कौन हो? क्या इस मंदिर की देवी हो?''

''लंबे समय से इस मंदिर में देवी नहीं हैं। मैं शिथिल मंदिरों को देखते हुए घूमती रहनेवाली देवी हूँ। तुम्हारा भक्ति-भाव मुझे बहुत अच्छा लगा। तुम्हें एक वरदान देना चाहती हूँ। माँगो।'' अदृश्य देवी ने कहा।

''मुझ पर दया दिखायी, यही मेरे लिए सब कुछ है। विषैले सर्पों और भयंकर जंगली जानवरों से भरे इस जंगल में फंस गया हूँ। मुझे सकुशल घर पहुँचा दीजिये।'' रंगा ने बिनती की।

''जाओ, कोई भी तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता।'' अदृश्य देवी ने हँसते हुए कहा।

यों रंगा सकुशल घर लौटा। इतने में गंगा वहाँ आया और कहने लगा, ''हमें ज़मींदार से मिलना है न! आने में इतनी देरी क्यों हो गयी? तुरंत निकलो।''

तब रंगा ने वह सब बताया, जो जंगल में हुआ। फिर कहा, ''और देरी हो जाती। उस अदृश्य देवता के वरदान के कारण सकुशल घर पहुँच गया।''

गंगा की पत्नी गौरी बग़ल में ही खड़ी होकर यह सब कुछ सुन रही थी।

यह सब सुनकर उसके मन में तरह-तरह के विचार आने लगे। उसके मन में एक सपना उठने लगा और यह सपना कैसे पूरा होगा, वह भी क्षण भर में उसने सोच लिया। और गम्भीर होकर खड़ी रही।

पंद्रह मिनटों के बाद जब गंगा और रंगा ज़मींदार से मिलने के लिए निकलने बाले ही थे कि, गौरी ज़ोर से चिल्ला पड़ी और पास ही की खाट पर गिर गयी। वह छटपटाती हुई पति से कहने लगी, ''मुझे तुरंत शहर के वैद्य के पास ले जाइये। नहीं तो यहीं मेरी मौत हो जायेगी।''

गंगा घबरा गया और दौड़कर किराये की एक बैलगाड़ी ले आया। उसने और रंगा ने मिलकर उसे गाड़ी में लिटाया।

''मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा गंगा।'' रंगा ने कहा।

''नहीं भैय्या। आप यहीं ठहर जाइये। आपको ज़मींदार से भी मिलना है न।'' हाँफती हुई गौरी ने कहा।

आखिर गंगा अकेला ही बैलगाड़ी में अपनी पत्नी के साथ बैठकर शहर की ओर चल पड़ा।

बाद, गाड़ी जैसे ही जंगल में पहुँची, गौरी उठ बैठी। गाड़ीवाले को किराया देकर भेज दिया।

गंगा ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा, ''यहाँ क्यों उतर गयी? तुम्हारा दिल का दर्द कैसा है?''

''मैं बिलकुल ठीक हूँ। मुझे कोई दर्द-वर्द नहीं

है। उस मूर्ख रंगा ने अदृश्य देवी से बेकार का बरदान मांगा। बेचारे के भाग्य में यही लिखा है। देखते जाना, क्या-क्या करती हूँ। मैं अपनी जिन्दगी को बदल कर रहूँगी।'' गौरी ने बिश्वास-भरे स्वर में कहा।

बेचारा गंगा अभी तक कुछ समझ नहीं पा रहा था कि गौरी को क्या हो गया है। पहले उसे दिल में दर्द हुआ। अब दिमाग में पता नहीं क्या सोच रही है। उसे भय हुआ कि दिल का रोग दिमाग में तो नहीं चला गया। वह बड़ी बेताबी से उजड़े मन्दिर को ढूंढती वहाँ पहुँची। गंगा भी उसके साथ-साथ गया। आधी रात हो चुकी थी। मंदिर के सामने प्रणाम करती हुई गौरी कहने लगी, ''माते, हे अदृश्य देवी, मुझे भी एक वरदान देना।''

''भला मैं इनकार कैसे कर सकती हूँ। तुम्हें भी बरदान दूँगी।'' अदृश्य देवी ने हँसते हुए कहा।

''माते, जो चाहूँ, वह हो जाए, ऐसा वर देना।'' गौरी ने माँगा।

''हाँ, दे दिया। अब जाओ, मुझे एक और मंदिर में जाना है।'' देवी ने कहा। गौरी के आनंद की सीमा न रही। वह कहने लगी, ''इस अंधेरी रात में कोई भी समझदार पैदल घर नहीं लौटेगा। लेकिन मेरे पास देवी का दिया वरदान है।'' उसने पति से कहा और आँखें बंद करके मन ही मन चाहा, 'आँखें बंद करके खोलने के पहले ही हम घर पहुँच जाएँ।'

दूसरे ही क्षण पति- पत्नी घर के सामने थे। तब तक रंगा ज़मींदार से मिलकर लौट आया। उसने गौरी से कहा, ''मुझे ज़मींदार के दिवान में नौकरी मिल गयी। कहो, दिल का तुम्हारा दर्द कैसा है?''

''छोड़ो, मेरे दिल के दर्द की बात। तुम्हारे भाग्य में ज़मींदार के यहाँ बेगारी करना लिखा है। हमें ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैंने अदृश्य देवी से अद्भुत बरदान पाया।'' गौरी ने बड़े ही गर्व से कहा।

बग़ल में ही खड़ी रंगा की पत्नी लक्ष्मी ने कहा, ''हाँ, तुमने ठीक कहा। जिसके भाग्य में जो लिखा है, उसे वही मिलेगा। यह बताओ तो सही, तुमने अदृश्य देवी से क्या बरदान पाया?''

''जो मन में चाहूँगी, वह मुझे मिल जाये, यही वर मुझे मिला। थोड़ी देर पहले हम जंगल में थे

और मन ही मन मैंने चाहा कि क्षण भर में हम घर के सामने रहें और जैसा चाहा, वैसा ही हुआ।'' गौरी ने कहा।

गौरी गर्व-भरे स्वर में कुछ और कहने ही वाली थी, गंगा ने उसे रोकते हुए कहा, ''आँख बंद करके खोलने के पहले ही घर के सामने रहें, यह वर माँगकर तुमने बहुत बुरा किया। देवी के दिये वरदान को तुमने व्यर्थ कर दिया। हो सकता है, आगे से अपने मन में जो चाहोगी, वह न हो।''

गौरी को लगा कि पति के कथन में वास्तविकता है। वह घबरा गयी, पर अपनी घबराहट प्रकट किये बिना बोली, ''देखो, मेरे वरदान की महिमा।'' फिर मन ही मन कहने लगी, 'हमारा खपरैल का घर भवन में बदल जाए।' पर, ऐसा नहीं हुआ। घर भवन में नहीं बदला। अब गौरी को मालूम हो गया कि उससे कितनी बड़ी गलती हो गयी।

दूसरे दिन रंगा ने दोस्त से कहा, ''गंगा, कल मैं दिवान की नौकरी पर जाने के लिए निकल रहा हूँ।'' ''हाँ, सकुशल जाना। मेरी शुभ-कामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। कल रात को तुम्हारे साथ ज़मींदार से मिलने आता तो तुम्हारे साथ अभी मैं भी दिवान की नौकरी करने आता। मेरे भाग्य में शायद यही लिखा है कि मैं यही रहूँ और तक़लीफें सहता रहूँ। चलो, जो हुआ सब अच्छाई के लिए ही हुआ है'' गंगा ने कहा।

''क्यों परेशान होते हो गंगा। जैसे ही नौकरी पर लग जाऊँगा, तुम्हारे लिए किराने की दुकान का इंतज़ाम करूँगा। तुम व्यापार कर सकते हो। हमारी पत्नियाँ दीदी बहन की तरह यहाँ रहीं तो वहाँ भी रहेंगी। तुम लोग भी हमारे साथ रहोगे।'' रंगा ने कहा।

उसकी बातों को सुनते हुए वहाँ पहुँची गौरी ने कहा, ''दुराशा के वश में आकर मैंने अच्छा मौका खो दिया। स्वार्थ ने मुझे गुमराह किया। तुमसे अधिक भाग्यवान बनने की इच्छा से प्रेरित होकर मैंने अनर्थ किया। उस अदृश्य देवी ने मुझे अच्छा पाठ सिखाया। भैय्या, तुम्हारी भलाई जन्म भर भुला नहीं सकती।''

रंगा ने दोस्त का हाथ बड़े प्यार से पकड़ लिया।

दुख-दर्द अपने-अपने

सुकुमार और मनोहर मिर्ज़ापुर के दिवान में काम करते थे। दोनों क्रमशः घने मित्र बन गये। हर शाम वे गोविंद की मिठाइयों की दुकान में आते रहते। कई कर्मचारी भी वहाँ खाते रहते थे। सुकुमार कुछ नहीं खाता था। किन्तु मनोहर कोई न कोई पकवान खरीद कर जरूर खाता था।

मनोहर, सुकुमार से अक़्सर पूछा करता था, ''तुम क्यों कभी भी कुछ नहीं खाते?'' सुकुमार कहता था, ''सवेरे पेट भर खाके आता हूँ। दुपहर को भोजन कर लेता हूँ। भला, क्या खाऊँगा?''

''तुम तो खुशनसीब हो। तुम्हारी पत्नी सवेरे ही रसोई बनाकर खिलाती है। मेरी पत्नी देरी से उठती है। इस बात पर अक़्सर हममें विवाद होते रहते हैं,'' मनोहर ने कहा। सुकुमार कहता, ''दुख-दर्द अपने-अपने।'' जब-जब सुकुमार यों कहता, तब-तब मनोहर को बहुत ताज्जुब होता था।

सुकुमार ने एक दिन मनोहर से कहा, ''कल मेरा जन्म-दिन है। दिवान जाने के पहले मेरे घर आ जाना। एक साथ नाश्ता करेंगे और फिर वहाँ से दिवान जायेंगे।''

दूसरे दिन मनोहर, सुकुमार के घर आया। सुकुमार की पत्नी ने प्यार से उसका स्वागत किया और कहा, ''बैठिये, नाश्ता ले आती हूँ। उसने बड़ा, पूरन पूड़ी दोनों को परोसा।

एक बड़ा को मुँह में रखते ही मनोहर भयभीत हो गया। वह कंकड़ की तरह सख़्त था। उससे चबाया नहीं जा रहा था। पर, सुकुमार उन्हें आरामसे खा रहा था।

खाने के बाद दोनों दिवान जाने निकल पड़े। रास्ते में सुकुमार ने मनोहर से पूछा, ''नाश्ता कैसा रहा?'' मनोहर ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''अब समझ में आया कि तुम क्यों अक़्सर कहते रहते हो - दुख-दर्द अपने-अपने।''

-शिवराम

भयंकर घाटी

16

(केशव और उसके साथी दो जंगली युवकों के साथ ब्रह्मापुर के सैनिकों की आँखों में धूल झोंक कर, एक सुरंग के रास्ते नदी में उतर, फिर वे एक प्रपात में फंस गये। आखिर सुरक्षित हो वे नदी में तैरने लगे। पर वे किनारे पर पहुँच रहे थे कि उनको वहाँ वन्य जाति के कुछ लोग दिखाई दिये। बाद में)

नदी के किनारे वन्य जातिवालों को खड़े-खड़े अपनी ओर देखते हुए जानकर जंगली युवक घबरा उठे। वे उनकी जाति के न थे। उन दोनों की जातियों में विरोध था। उनको उनका नज़र आना भी गँवारा न था। जब वे प्रपात में गिर गये थे तब सिवाय एक तलवार के उनके सब हथियार पानी में बह गये थे।

वे सोचने लगे कि अपनी और हमारे सरदार के इन शरणागत अतिथियों की रक्षा कैसे कर पायेंगे। दोनों जंगली युवक तैरते हुए किनारे की ओर बढ़ रहे थे और एक दूसरे को देखते हुए कुछ उपाय सोच रहे थे कि किनारे पर पहुँच कर उनसे कैसे निबटें, तभी कड़कती आवाज में किसी ने कुछ कहा।

"ज्येष्ठ, कनिष्ठ, क्या तुम्हारे हथियार सब ठीक हैं? वे जो खड़े हैं, मालूम नहीं कि वे शत्रु हैं अथवा मित्र? वे पाँच से अधिक नहीं मालूम होते। अगर लड़ना ही पड़ेगा, तो हमारे हथियार ही हमारी र क्षा करेंगे।" केशव के बूढ़े पिता ने सबको सावधानकिया।
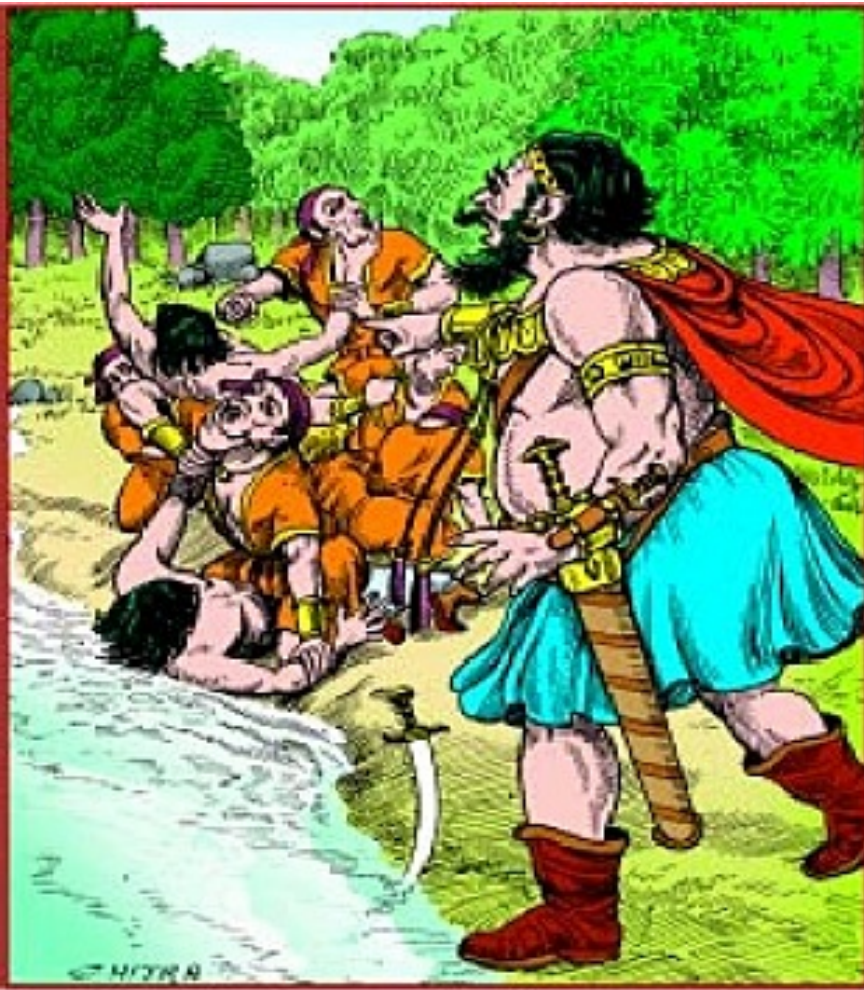
केशव और जयमल्ल के पास सिवाय तलवार के, जो उनकी कमर में लटक रही थी और कुछ न था। किनारे पर खड़े होकर उन्हीं को देख रहे वन्य जाति के जो लोग थे, लगता था कि उनके पास बाणों के अलावा कोई और हथियार नहीं है। ऐसी परिस्थिति में इतनी दूरी से वे उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकते।

जयमल्ल और केशव यों सोच रहे थे और जब ज़मीन उनके पैरों को छू गयी तब उन्होंने तैरना बंद कर दिया और किनारे की ओर बढ़ने लगे। इतने में एक जंगली पीछे मुड़ा और ज़ोर से चिल्लाता रहा। इसके तुरंत बाद बाघ का चर्म पहने एक मोटा आदमी एक बड़े पत्थर के पीछे से आगे आया। उसकी नज़र केशव पर पड़ी, जो किनारे की ओर बढ़ा चला आ रहा था। वह एकदम घबरा गया और कहने लगा, "पाँच हट्टे-कट्टे आदमी। इन सबको बिना मारपीट किये और चोट पहुँचाये पकड़ना हमसे कैसे संभव होगा? दूसरों को भी यहाँ बुलाओ।"

"ज्येष्ठ, कनिष्ठ, इन बदमाशों का काम तुम तमाम करो। इतने में इनकी सहायता करनेवाले उन नीचों का काम मैं तमाम करूँगा।" कहता हुआ वह बूढ़ा किनारे पर कूदा और पेड़ों की ओर दौड़ता हुआ गया। उसके पीछे भील युवक भी आये और वे तलवार चलाने ही वाले थे कि इतने में वे जंगली आकर टूट पड़े। मोटा आदमी इधर-उधर दौड़ने लगा और हांफते हुए कहने लगा, "बड़े ही सुन्दर और हट्टे-कट्टे जवान हैं। हाथ-पाँव तोड़ डाले तो मैं तुम लोगों की जान ले लूँगा। सावधान! उन्हें एक भी चोट लगनी नहीं चाहिये। एक भी घाव न हो। सावधानी से इन्हें पकड़ लो।"

पाँचों जंगली तूफान की तरह उनपर आ गिरे, जिसकी वजह से केशव और जयमल्ल भी अपनी तलवारों को उपयोग में न ला सके। वे अपनी मुट्ठियों से जंगलियों पर वार करने लगे और ज़ोर से उनके पेटों में पैरों से मारने लगे।

परंतु जंगलियों ने उनपर अपना अधिक बल नहीं दिखाया। बस, वे उनके पैर पकड़कर नीचे गिराने की कोशिश में थे। कुछ क्षणों में उन्हें कामयाबी हासिल हुई। उन्होंने केशव और जयमल्ल के पाँव पकड़कर उन्हें नीचे गिराया और रस्सियों से उनके हाथ बांध दिये।

बूढ़ा और भील युवक जिन पेड़ों की ओर दौड़े-

दौड़े गये, वहाँ से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाहटें सुनायी देने लगीं। "ज़रूरत पड़े तो मार डालो। पर बचकर वे किसी भी हालत में निकल न पायें," यों एक भयंकर स्वर सुनायी दे रहा था। यह स्वर किसी और का नहीं था, उसके पिता का ही था। केशव, अब समझ गया कि उसका बाप और भील युवक खतरे में फंस गये हैं, पर अब वह निरसहाय था।

जंगली मोटा सरदार बंधे हुए केशव व जयमल्ल को ध्यान से देखने लगा और बोला, "हट्टे-कट्टे जवान हैं। मेरे आदमियों को खाली हाथों से पीटकर रख दिया।" कहकर वह हँसने लगा।

"हमारी तलवारें हमारे सुपुर्द कर दो। चाहो तो तुम और तुम्हारे आदमी लड़ने आ जाओ। देखते हैं, कौन जीतता है," केशव बाघ की तरह गरज उठा।

मोटे आदमी ने इसपर हँसते हुए कहा, "तलवारों और बाणों का उपयोग करने लगें तो किसी न किसी को मर जाना पड़ेगा। इससे धन भी नष्ट होगा।" मोटे आदमी ने कहा।

केशव, जयमल्ल ने एक -दूसरे को देखा। उसी क्षण वे ताड़ गये कि वे किस प्रकार के दुष्टों के चंगुल में फंस गये। ये मानवों को गुलाम बनाकर बेचनेवाले नर राक्षस हैं। इसी वजह से उन्होंने उन्हें घायल नहीं किया और सावधानी से पकड़ लिया।

"बाबा का क्या हुआ? वे कहाँ है? यहाँ तो सब कुछ शान्त मालूम होता है, नीरवता है।" केशव ने कहा।
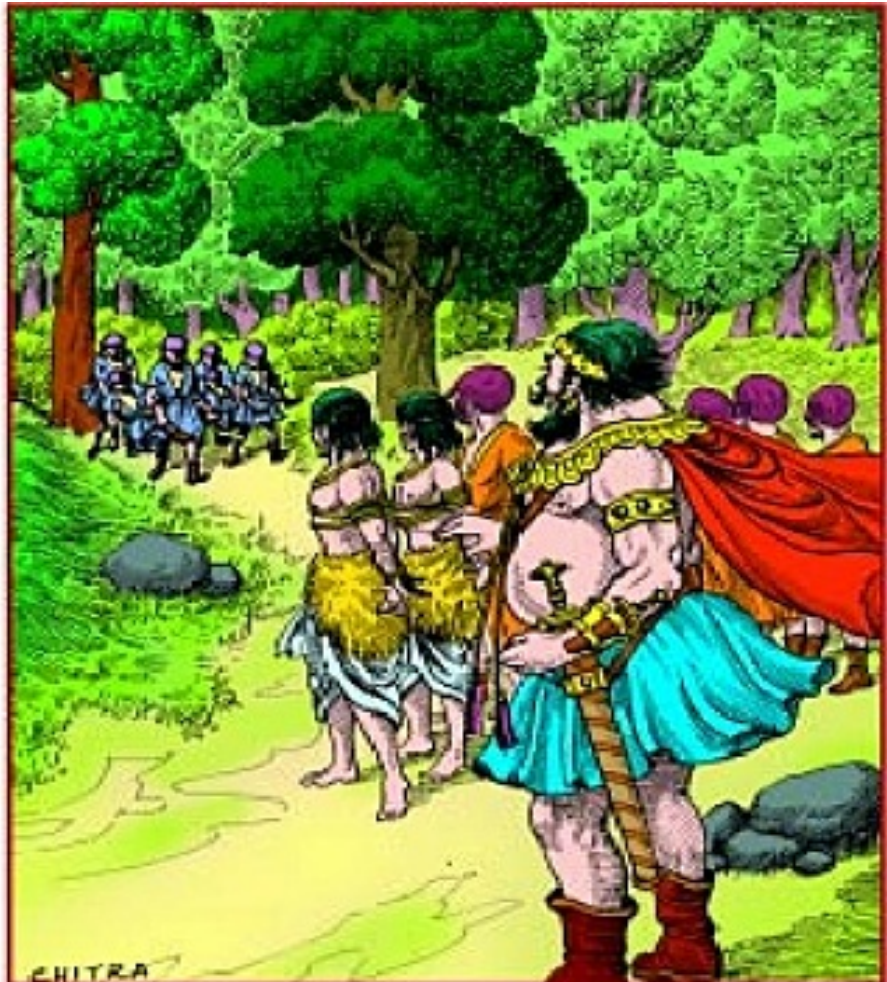
जयमल्ल ने सिर हिलाते हुए कहा, "तुम्हारे पिता और वे जंगली युवक भी हमारी तरह पकड़े गये हैं।"

"पेड़ों के पीछे से फिर किसी का ज़ोर से चिल्लाना सुनाई पड़ा। सबने उस ओर सिर मोड़कर देखा। देखते देखते वन्य जाति के चार लोग उनके दोनों जंगली अनुचरों को बाँधकर ला रहे थे। मोटे सरदार ने उनको देख, दाँत कटकटाते हुए कहा, "तो दो मारे गये हैं, इनके साथवाले तीनों कहाँ गये? और बाकी लोग कहाँ हैं?"

"जब हमने उनको बिना चोट किये, पकड़ना चाहा, तो उन दुष्टों ने अपनी तलवारों से इन दोनों को मार दिया और दो को घायल कर दिया। वे नदी के किनारे भागे जा रहे थे कि हमारे लोगों ने पीछा किया।" उनमें से एक ने कहा।

"उनको ज्यादा चोट लगी है। एक के गले पर तलवार की चोट लगी है। दूसरे के पेट में। उनकी हालत अब और तब की है।"

नौकर ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि मोटा सरदार फिर ज़ोर से चिल्लाया, "मरे हुओं के लिए और मरनेवालों के लिए ही क्या मैं व्यापार चला रहा हूँ? उन शवों को, घायलों को नदी में घसीट कर फेंक दो और जल्दी जाओ। इस खून की गन्ध पा, शेर भी यहाँ आ सकते हैं।"

"छीः, तुम मनुष्य नहीं हो। राक्षस हो। जिन्दों को पानी में फिंकवाते हो।" केशव ज़ोर से चिल्लाया और उसने अपने बन्धन तोड़ने का प्रयत्न किया।
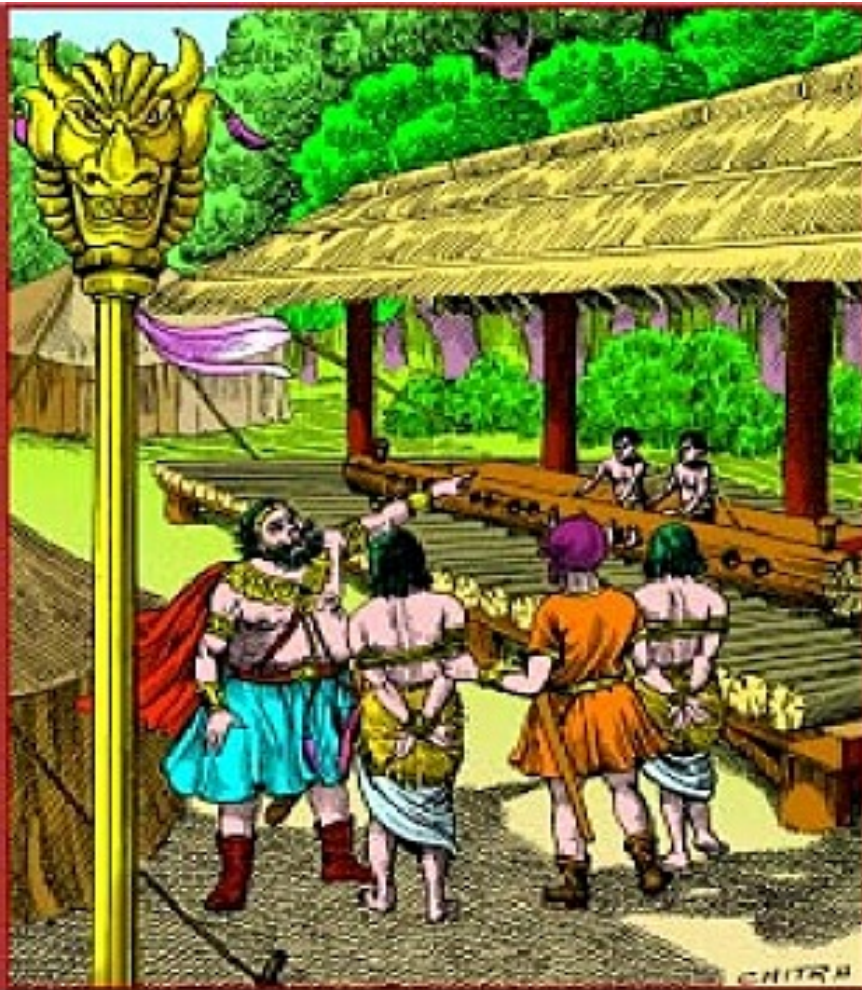
वह मोटा सरदार गुस्से में काँपता हुआ चिल्लाया, "यानी अपने चार आदमी मारे गये और तुम दो ही पकड़ पाये। यानी दो का नुकसान रहा। अगर ऐसा ही काम चलता रहा, तो व्यापार हो चुका।"

उसके नौकर कुछ समय तक तो सिर नीचे किये खड़े रहे, फिर धीमे - धीमे कहने लगे, "हुजूर, इन दोनों घायलों को भी तो डेरों के पास ले जाना है। उनको ज़रा मदद करने के लिए कहिये।" कहते हुए उन लोगों की ओर देखा, जो केशव और जयमल्ल को पकड़े हुए थे।

यह सुन मोटा आदमी चौंका, आँखों से अंगारे बरसाते हुए नौकरों पर गरजा– "तुमने जो किया, सो किया, अब साथी चाहिये। ये घायल बुजदिल क्या डेरों तक पैदल नहीं जा सकते?"

केशव का चिल्लाना सुन, मोटा सरदार मुस्कुराया। "जिसकी हालत अब तब की है, क्या फर्क है अगर वह ज़मीन पर मरता है या पानी में। यदि मैंने खून देख लिया, तो मेरा दिल धड़-धड़ करने लगता है। मेरा बड़ा मुलायम दिल है। देखो न, तुमको कितनी होशियारी से पकड़ा गया है, कहीं कोई चोट नहीं लगने दी, घाव न लगने दिया।"

इस राक्षस का जवाब कैसे दिया जाये, केशव और जयमल्ल नहीं सोच पाये। यदि कभी मौका मिला, तो उसे खड़े-खड़े मार देने का उन्होंने निश्चय किया। लेकिन फिलहाल वे कितने असहाय हैं, वे जानते थे। बस, इतनी किस्मत अच्छी थी कि उन्हें मारा-पीटा या कत्ल नहीं किया गया। उलटे उन्हें खाने-पीने के लिए

अच्छा मिलेगा क्योंकि उन्हें गुलामों की तरह बेचा जायेगा और उनके बदले इस मोटे जंगली को ढेर सारा सोना मिलेगा। 'देखें! किस्मत क्या-क्या खेल दिखाती है। यदि जान रही तो बचने का कोई उपाय शायद मिल जाये।' जयमल्ल ने सोचा।

केशव के मन में रह-रह कर पिता के लिए चिन्ता हो रही थी। मोटा सरदार अपने नौकरों को डरा धमका कर चला गया। एक घंटा जंगल में चलने के बाद सब बड़े-बड़े डेरों के पास पहुँचे।

''इन दोनों को तने से बाँध दो। उसके बाद, तुम में से दो जाकर यह मालूम करो कि उन तीनों का जो भाग गये थे, क्या हुआ। उनका भी पता लगाओ, जो उनका पीछा कर रहे थे।'' मोटे सरदार ने कहा।

केशव और जयमल्ल के पैरों को तने के खोल में रखकर उसने इधर - उधर के छेदों में लकड़ी की कीलें गाड़कर, बाँध दिया। उनके गलों में लोहे की पट्टियाँ बाँध दीं। उनसे एक जंजीर लगा दी। उनके दोनों तरफ कुछ और लोग उसी तरह बन्धे थे।

''अरे, हम पर भी कितनी भारी आपत्ति आई है। केशव, हमारी जिन्दगी तो, जानवरों से भी बदतर है।'' जयमल्ल ने दुखी हो कहा।

''घबराओ मत मल्ल, हमें ज़रूर इन दुष्टों के हाथ से निकल भागने का मौका मिलेगा। मैं अपने पिता के बारे में चिन्तित हूँ।'' केशव ने कहा।

दिन में अन्धेरा होने से पहले वह मोटा सरदार, केशव और जयमल्ल के पास चार पाँच बार आया।

उसने उनके योग क्षेम के बारे में इस तरह पूछा, जिस तरह कोई पिता अपने पुत्र से भी क्या पूछेगा! उसने नौकरों से उनको अच्छा खाना दिलवाया।

"इन दोनों को इस तरह देखो, जैसे ये हमारे ही बच्चे हों। ये चार आदमी के बराबर हैं। चार मर जो गये हैं और ये दो जैसे भी हों, मुझे कोई नुक्सान नहीं होगा। फिर भी वे फरार तीन दुष्ट, उनके पीछे लगे बेवकूफ़ और उनको ढूँढ़ने गये, ये बेअक्ल इन सब का हुआ क्या?" मोटा सरदार अपने नौकरों पर गरमाने लगा।

अन्धेरा होने के कुछ देर बाद मोटे सरदार के दस नौकर कराहते कराहते डेरों के पास आये। वे दो ऐसे अपने साथियों को, जिनकी हालत बहुत नाजुक थी। वहाँ ढोकर लाये।

उनको आता देख मोटे सरदार ने एक हन्टर लिया और चिल्लाता गालियाँ उगलता, उनके पास आया। "वे तीनों कहाँ हैं? ये तीनों कैसे घायल हुए? जो गये थे, अभी तक वापस नहीं आये हैं?" वह उन पर हन्टर बरसाने लगा।

नौकरों के प्राण हन्टर खा-खाकर निकलने लगे। उनमें से एक रोता हुआ बोला, "तीनों हम में से एक और को मारकर जंगल में भाग गये हैं। वह बूढ़ा, आदमी नहीं सचमुच का राक्षस है। क्या हुनर पाया है उसने तलवार चलाने में..."
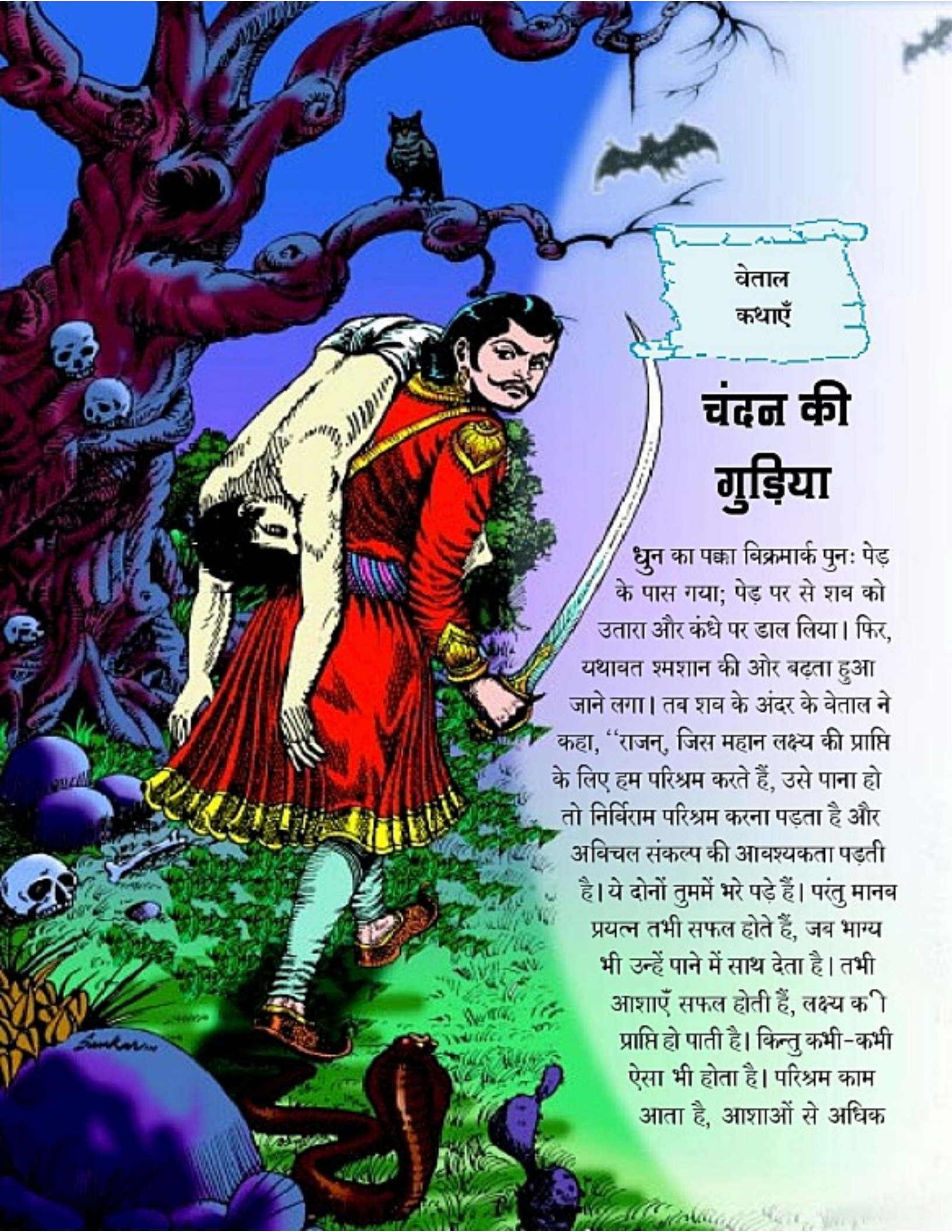
"तुम सब गधों ने मिलकर मेरी लुटिया डुबो दी है। दो जमा और छः खर्च। अगर इन दोनों के लिए ढेर-सा सोना न मिला, तो," वह हन्टर हवा में घुमाते चिल्लाने लगा।

उस दिन रात को केशव और जयमल्ल सो न सके। उनके दोनों पैर जो बँधे हुए थे, ऐसा लगता था, जैसे झड़ गये हों। जंगल में शेर गरज रहे थे। डर के मारे उन दोनों की बुरी हालत थी। यद्यपि केशव स्वयं गुलामों के एक व्यापारी के हाथ पकड़ा गया था, पर उसे यह जानकर खुशी हुई कि जंगल में उसका पिता कहीं सुरक्षित है।

सबेरा होते ही मोटा सरदार दो आदमियों को साथ लेकर, केशव, जयमल्ल के पास आया। साथ के दोनों आदमियों ने अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए थे, कानों पर बड़ी-बड़ी बालियाँ थीं। वे बड़े व्यापारी जान पड़ते थे। ***(अभी है)***

वेताल कथाएँ

चंदन की गुड़िया

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और कंधे पर डाल लिया। फिर, यथावत श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, जिस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम परिश्रम करते हैं, उसे पाना हो तो निर्विराम परिश्रम करना पड़ता है और अविचल संकल्प की आवश्यकता पड़ती है। ये दोनों तुममें भरे पड़े हैं। परंतु मानव प्रयत्न तभी सफल होते हैं, जब भाग्य भी उन्हें पाने में साथ देता है। तभी आशाएँ सफल होती हैं, लक्ष्य की प्राप्ति हो पाती है। किन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है। परिश्रम काम आता है, आशाओं से अधिक

सफलता प्राप्त होती है, पर कुछ लोग ऐन बक्त पर उन्हें जान-बूझकर फिसल जाने देते हैं। तुम्हें सावधान करने के उद्देश्य से, एक ऐसे ही किसान युवक की कहानी सुनाऊँगा। थकावट दूर करते हुए वह कहानी सुनो।'' फिर वेताल यों कहानी सुनाने लगा:

साकेतपुरी गाँव शृंगबर ज़मींदारी का एक गाँव था। दिलीप उस गाँव के संपन्न किसान का बेटा था। पिता के पेशे में उसकी कोई रुचि नहीं थी, पर हस्तकलाओं में वह माहिर था। बस, एक बार देख ले तो वह किसी भी कला को सीख लेता था। चिकनी मिट्टी, चूना उसे दिखायी पड़े तो वह उन्हें सुंदर पुष्प की आकृति की सुराहियों या गुड़ियों के रूप मे बदल देता था। बाँस उसके हाथ आ जाए तो देखते-देखते उससे बाँसुरी बन जाती और बज उठती। प्रकृति का कोई सुंदर दृश्य वह देख लेता तो उसका चित्रांकन किये बिना उसे नींद नहीं आती थी। एकलव्य की तरह दिलीप ने स्वयं ही इन हस्तकलाओं को सीखा था।

उस साल शृंगबर ज़मींदार की पुत्री-मणिमाला की अठारहवाँ जन्मदिनोत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जानेवाला था। ज़मींदार ने मुनादी पिटवायी कि पूरी जनता इस शुभ अवसर पर अवश्य उपस्थित हो। साकेतपुरी की जनता ने दिलीप से विनती कि वह इस अवसर पर कोई अद्‌भुत व असाधारण भेंट ज़मींदार की पुत्री को समर्पित करने के लिए कोई ऐसी कला कृति तैयार करे, जो सर्वोत्तम व अति आकर्षक हो।

दिलीप सोचता रहा कि ऐसी कोई सुंदर वस्तु क्या हो सकती है। आखिर वह इस निर्णय पर आया कि लाल चंदन का सिंहासन बनाऊँ। दूसरे ही दिन लाल चंदन की लकड़ी मँगवाई गई। सिंहासन की तैयारी शुरू हो गयी। उसके हस्तों को राजहंस के पंखों की तरह और पैरों को नाट्य भंगिमाओं में मस्त सालभ हिरणों की तरह उसने नक्काशा। सिर में रंगीन पत्थरों से कलगी सजायी। सुंदर लताओं व पुष्पों से नक्काशी की। जब काम पूरा हुआ तो उसने बचे चंदन की लकड़ी से एक सुंदर कन्या की गुड़िया बनायी। वह चित्र देखते ही बनता था। कितना ही आकर्षक लगता था। उस गुड़िया को वह अपने लिए ही सुरक्षित रखना चाहता था। उसने कला कृति को महीन साड़ी पहनाकर सजाया, उसका तरह-तरह से अलंकार

किया। छोटे-छोटे गहने पहनाये और उसके माथे पर बिंदी लगायी।

सिंहासन व चंदन के कला खंड को देखकर गाँव की जनता ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके बाद, उन्होंने शृंगबर ले जाकर वह सिंहासन ज़मींदार की पुत्री को समर्पित किया। उस सिंहासन को देखकर मणिमाला बेहद खुश हुई। पिता से, उस कलाकार को देखने की इच्छा प्रकट की। ज़मींदार ने दिलीप को बुलवाया।

दिलीप अपने साथ चंदन की गुड़िया भी ले आया। वह गुड़िया मणिमाला को कितनी ही अच्छी लगी। वह कलाकार भी उसे बहुत भाया।

''पिताजी, वह अति सुंदर गुड़िया मुझे चाहिये,'' मणिमाला ने कहा।

''आप मुझे क्षमा करें। मैंने इस गुड़िये की सृष्टि अपने लिए की। किसी को भी दे नहीं सकता।'' दिलीप ने निस्संकोच कह दिया।

''जितनी क़ीमत चाहिये, दूँगा। कहो, कितना चाहते हो?'' ज़मीन्दार ने पूछा।

''प्रभु, यह गुड़िया मेरी जान है। यह किसी को भी नहीं दूँगा।'' दिलीप ने दृढतापूर्वक कहा।

''प्राणहीन यह गुड़िया तुम्हारा प्राण है? चाहो तो यह मणिमाला तुम्हारी हो जायेगी। वह गुड़िया मेरे हवाले कर दो।'' मणिमाला ने कहा। उसके मन में दिलीप और उसकी कला के प्रति प्रेम पैदा हो गया।

''यह मेरे हृदय की कल्पना सुंदरी का प्रतिरूप है। ऐसी वधू की ही खोज में हूँ। माफ़ कीजिये,
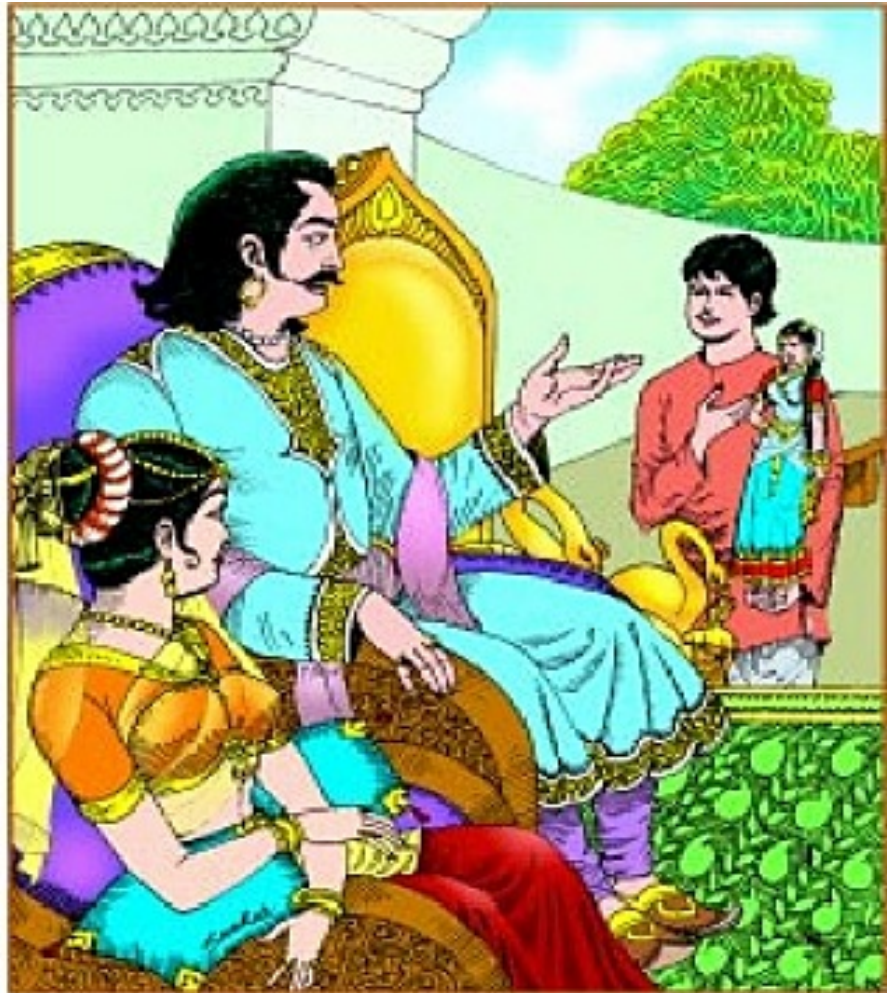
आपकी इच्छा पूरी नहीं कर सकता।'' दिलीप ने कहा।

उसके दुराग्रह व हठ ने मणिमाला के अहंभाव को चोट पहुँचायी। अपने क्रोध को प्रकट किये बिना उसने पिता को देखा। ज़मींदार पुत्री के मनोभाव को ताड़ गया। उसने दिलीप से कहा, ''दिलीप, मानता हूँ कि तुम एक अद्वितीय कलाकार हो। मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूँ। इसीलिए मैं तुम्हें छे महीनों का समय दे रहा हूँ। इस अवधि के अंदर तुम्हें तुम्हारी इच्छा के अनुरूप कन्या मिल गयी तो ठीक है। अन्यथा तुम्हें यह गुड़िया मेरी पुत्री को सौंपना होगा और उसकी इच्छा के अनुकूल चलना होगा। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं ज़मींदारी से तुम्हारा निष्कासन कर दूँगा।'' क्रोध भरे स्वर में ज़मींदार ने कहा।

''आपकी इच्छा'' कहकर दिलीप वहाँ से निकल पड़ा और अपनी कल्पना सुंदरी की खोज में गाँव-गाँव भटकने लगा। बहुत ढूँढ़ा, पर ऐसी सुंदरी उसे कहीं भी नहीं मिली। निराश होकर एक दिन थका-मांदा वह जंगल से होता हुआ गुज़रने लगा। भूख के मारे वह तड़पने लगा। वह बेहोश होकर गिर गया। जब होश आया तो उसने अपने को एक झोंपड़ी में पाया।

उसने सामने एक सामान्य रूपरेखा वाली भील युवती को देखा। दिलीप ने जब आँखें खोलीं तो उस युवती ने उसे पीने के लिए पानी दिया और कहा, ''आप जंगल में बेहोश पड़े मिले। उस पर्वतदेवी की कृपा से अभी-अभी होश में आये। लगता है, पहाड़ी नींबू के पानी, शहद भरे पेय ने आप पर प्रभाव डाला। ठहरिये, पिताजी को अभी बुलाती हूँ।'' कहकर वह युवती बाहर दौड़ी।

उसका नाम मंगला था। उसका बाप वहाँ के लोगों की चिकित्सा जड़ी-बूटियों से करता था। जब वह बेटी के साथ झोंपड़ी के अंदर आया तो उसने दिलीप की नब्ज देखी और कहा, ''बाबूजी, आप बहुत कमज़ोर हैं। चार दिनों तक यहीं रहिये और विश्राम कीजिये। मेरी बेटी मंगला आपकी सेवा करेगी।'' दिलीप ने मान लिया। चारों दिन वह मंगला को ध्यान से देखने लगा।

एक दिन एक बाघ शिकारी से कि सी प्रकार अपने को बचा पाया, पर वह घायल हो गया। पाँव से रक्त बहने लगा। मंगला ने उसकेपाँव पर मरहम-पट्टी की।

''क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं कि वह क्रूर पशु तुम्हें खा जायेगा?'' आश्चर्य भरे स्वर में दिलीप ने पूछा।

''नहीं, मानती हूँ कि वह क्रूर पशु है, परंतु भूख लगने पर ही वह किसी पर हमला करता है। हमारी आँखों में अगर उसे प्रेम, दया दिखायी पड़े तो कोई भी हिंसक पशु हमें हानि नहीं पहुँचाता,'' मंगला ने हँसते हुए कहा। मंगला पत्तों को पीसती है, कषाय गरम करती है और यों पिता की मदद करती रहती है। घर के काम-काज खुद संभालती है। मधुर स्वर में वह गाती भी रहती है। किसी को किसी प्रकार की सहायता की ज़रूरत पड़ती है, तो वह आगे आती है।

चौथे दिन वहाँ से निकलते समय चंदन की गुड़िया मंगला को देते हुए दिलीप ने उससे कहा,

"तुम्हारी मदद कभी भूल नहीं सकता। उसके बदले यह गुड़िया तुम्हें भेंट स्वरूप दे रहा हूँ।"

"नहीं, मेरी यही हार्दिक इच्छा है कि गुड़िया जैसी सुंदर पत्नी आपको मिले। आप सकुशल घर पहुँचें, यही मेरे लिए बहुत बड़ी भेंट होगी," कहते हुए उसने गुड़िया लेने से इनकार कर दिया और जंगली शहद से भरी चमड़े की थैली उसे देने लगी।

"तुम्हारा शहद ही नहीं। इससे भी बढ़कर तुम्हारा मन मीठा है। उस मन को अपना बनाना चाहता हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?" दिलीप ने अपने मन की बात बतायी।

मंगला शरमा गयी और हँसती हुई झोंपडी के अंदर चली गयी। सप्ताह ही के अंदर मंगला के पिता ने उनकी शादी करवायी और मंगला को दिलीप के साथ भेजा।

पत्नी समेत दिलीप शृंगवर गया और ज़मींदार से मिलकर कहा, "प्रभु, आपकी बेटी ने चंदन की गुड़िया माँगी। लीजिये, उन्हीं को मैं यह दे रहा हूँ। स्वीकार कीजिये।"

"कीमत क्या दूँ?" ज़मींदार ने पूछा।

"मैं कोई क़ीमत नहीं माँग रहा हूँ। इसे आपकी बेटी को भेंट स्वरूप दे रहा हूँ।" बड़े ही विनय के साथ दिलीप ने कहा। ठीक उसी समय मणिमाला वहाँ आयी और कहने लगी, "यह भील युवती ही क्या तुम्हारी कल्पना सुंदरी है? गुड़िया में जो लावण्य है, वह इसमें रत्ती भर भी नहीं है। क्या यह युवती मुझसे भी अधिक सुंदरी है?" फिर पिता की ओर मुड़कर उसने कहा, "पिताजी, दिलीप
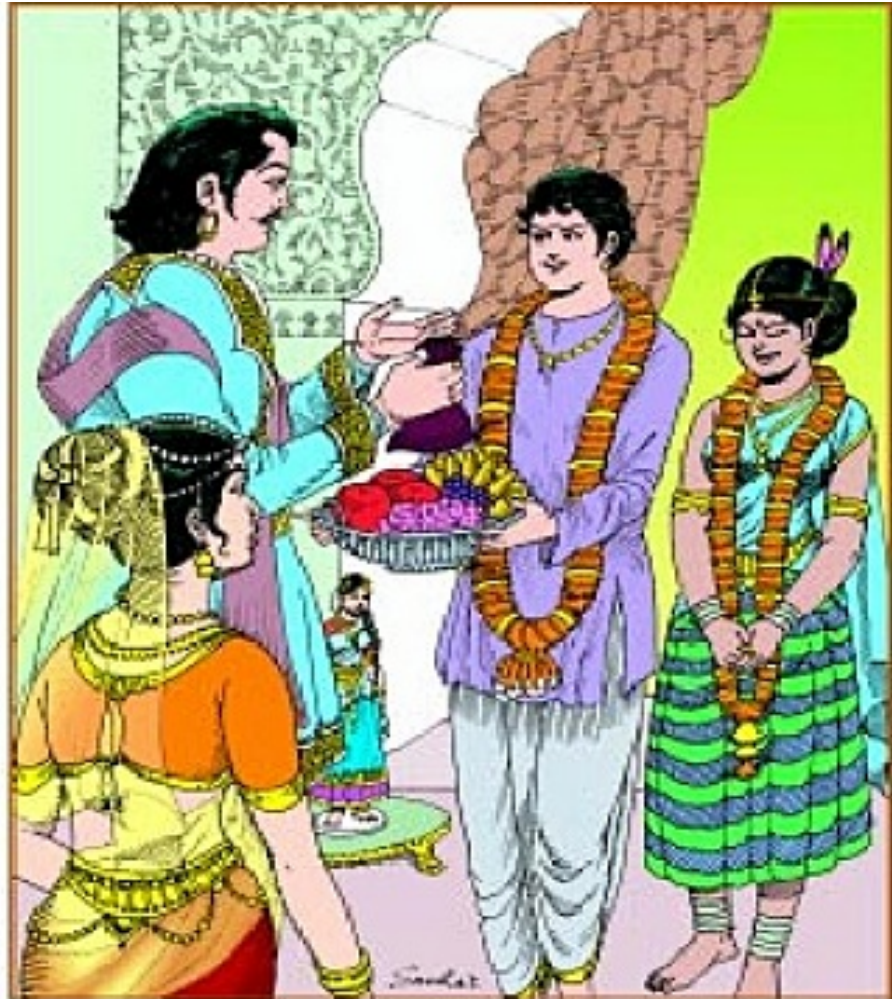
हार गया। गुड़िया ले लीजिये और उसे कठोर दंड दीजिये।"

ज़मींदार ने एक बार अपनी बेटी को देखा और फिर दिलीप से कहा, "दिलीप, मुझे माफ़ करो। अपनी बेटी के अहंकार और गर्व भरे स्वभाव पर मुझे शर्म आती है। इस गुड़िया की क़ीमत के रूप में नहीं बल्कि तुम्हारे विवाह के अवसर पर इन हज़ार अशर्फियों को भेंट में दे रहा हूँ। इन्हें स्वीकार करना।" दिलीप ने भेंट स्वीकार की, ज़मींदार को नमस्कार किया और मंगला समेत स्वग्राम जाने के लिए निकल पड़ा।

वेताल ने यह कहानी सुनायी और राजा से कहा, "राजन्, दिलीप ने एक गुड़िया मात्र के लिए ज़मींदार की बेटी और उसकी अपार संपत्ति को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। और

आख़िर एक ऐसी भील युवती को अपनी अर्धांगिनी बनाया, जो न ही सुंदर थी और न ही संपन्न। यह उसका अज्ञान नहीं तो और क्या है? ठीक है, उसने मंगला से विवाह कर लिया। उसे चाहिये था कि उसे लेकर वह अपना गाँव चला जाए। ज़मींदार के पास सीधे चले आने की क्या ज़रूरत थी? ज़मींदार अगर उसे कठोर दंड देता तो बेचारी मंगला के साथ अन्याय नहीं होता? उसका यह स्वभाव टेढ़ा नहीं लगता? इन सबको देखते हुए लगता है कि दिलीप केवल एक कलाकार मात्र है, उसमें विज्ञता, लोकज्ञान नाम मात्र भी नहीं है। ऐसे मूर्ख से ज़मींदार क्षमा माँगता है और भेंट देकर उसका सत्कार करता है। क्या यह तुम्हें विचित्र नहीं लगता? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी तुम चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''दिलीप केवल एक निपुण कलाकार ही नहीं, सत्यान्वेषी भी है। यह सच है कि सुंदर रूप मात्र का होना पर्याप्त नहीं है, उसमें सुंदर मन का होना भी आवश्यक है। ज़मींदार की बेटी को देखने के बाद इस सच्चाई को उसने समझ भी लिया। मंगला को देखने के बाद वह जान गया कि बाह्य सौंदर्य से अधिक प्रधान है, आंतरिक सौंदर्य। असली सौंदर्य क्या होता है, इसे समझने के बाद ही उसने मंगला से विवाह किया। प्रत्यक्ष रूप से उसने अनुभव किया कि प्यार व स्नेह से भरे हृदय के सम्मुख बाह्य सौंदर्य का कोई मूल्य ही नहीं। जो दूसरों का आदर नहीं कर सकते, जिनमें स्वार्थ और दर्प कूट-कूटकर भरा है, वे मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं हैं। मणिमाला इसका जीता जागता उदाहरण है। जब उसने जान लिया कि काठ की जिस गुड़िय । में मणिमाला की तरह हृदय नहीं है, उसे उसके सुपुर्द करने के लिए भी तैयार हो गया। इसमें न ही अज्ञान है, न ही अविवेक। ज़मींदार से मिलने जानाउसकी ईमानदारी का प्रमाण है। इसीलिए ज़मींदार में भी ज्ञानोदय हुआ और दिलीप से क्षमा माँगी।''

राजा का मौन भंग होते ही, वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार : पद्मलता की रचना)

वास्तुशिल्प का चमत्कार

आगरे का किला इस बात का प्रमाण है कि मुगल साम्राज्य अपने स्वर्ण-काल में कितना शक्तिशाली था। इसका निर्माण सन १६३८-४८ में सम्राट शाहजहाँ द्वारा किया गया था। दीवारें ठोस बलुआ पत्थर से निर्मित की गईं। आक्रामकों से बचने के लिए दोहरी दीवारें बनाई गईं– बाहरी दीवार ७० फुट ऊँची तथा अन्दर की दीवार ३० फुट ऊँची। बीच के खन्दक में मगरमच्छों को रखा गया, जब कि दोनों दीवारों के मध्य की जमीन की एक पट्टी में क्रूर बाघों को रखा गया। शहंशाहदीवाने-आम में ठोस काले संगमरमर से बने सिंहासन पर बैठकर प्रजा से मिलता था। दीवाने-खास श्वेत संगमरमर से निर्मित किया गया था। जूही की मीनार को ज्यादातर शाहजहाँ की पत्नी मुमताज महल उपयोग में लाती थी, जहाँ उसने मृत्यु से पूर्व अपने चौदहवें बच्चे को जन्म दिया। बाद के बर्षों में, इसी स्थान पर शाहजहाँ को कैदी बनाकर रखा गया था, जहाँ वह बालकनी पर, जमुना पार ताजमहल को निहारता हुआ अपना समय बिताया करता था।

क्या तुम जानते थे?

चौबीस कैरट का सोना शुद्ध सोना नहीं होता, क्योंकि इसमें थोड़ा-सा ताम्बा मिलाया रहता है। शुद्ध सोना इतना मुलायम होता है कि इसे हाथ से मोड़ा जा सकता है।

नूपुरों की छमछम

जयंत गंगवर जमींदार के दिवान में काम करता था। वह बहुत ही अच्छे स्वभाव का था, साथ ही अक़्लमंद भी। इसी वजह से दिवान में काम पर लग जाने के थोड़े ही समय के अंदर उसने अच्छा नाम कमाया।

उसके माता-पिता ललितपुर नामक गाँव में रहते थे। जब वह नौकरी पर लग गया, वे भी गंगवर आ गये और बेटे के साथ रहने लगे। शहर में आ जाने के बाद भी जयंत स्वग्राम को नहीं भूला। अपने दोस्तों के साथ उसके रिश्ते जैसे के तैसे बने रहे। जब-जब उसे मौक़ा मिलता था, उनसे मिलने से वह चूकता नहीं था।

दीपावली त्योहार के अवसर पर जयंत अपने बाल्य मित्रों से मिलने और कुछ दिन उनके साथ रहने ललितपुर आया। महेंद्र, शिवदास, गुणशेखर और मनोहर उसके घने दोस्त थे। गाँव आने पर उसके मित्र बेहद खुश हुए। उन चारों दोस्तों के घर अगल-बग़ल में ही थे। चूँकि जयंत वहाँ चार दिनों तक रहनेवाला था, इसलिए यह निश्चय हुआ कि एक-एक दिन वह एक-एक के घर में रहेगा और उनका आतिथ्य स्वीकार करेगा।

पहले दिन जयंत, महेंद्र के घर में रहा। भोजन कर चुकने के बाद दोस्तों ने आपस में गपशप की और बचपन के मधुर क्षणों को याद किया। गाँव की वर्तमान स्थिति तथा देश की राजनीति के बारे में भी बातें हुईं। फिर इसके बाद बाकी तीनों दोस्त अपने-अपने घर चले गये।

रात को सोने केपहले महेंद्र ने बहुत ही भक्तिपूर्वक हनुमान का स्मरण किया और हनुमान चालीसा पढ़ता रहा। जयंत ने मुस्कुराते हुए कहा, ''लगता है, दैवभक्ति बहुत बढ़ गयी है। क्या वैरागी बनने का इरादा है?

''नहीं, नहीं, भय बहुत बढ़ गया है, इसलिए रक्षा के लिए हनुमान जी को याद कर रहा हूँ। वे संकट मोचन हैं न?'' महेंद्र ने कहा।

''क्यों?'' जयंत ने पूछा।

नागेश्वर गर्ग

"यह एक लंबी कहानी है। बहुत रात हो गयी, सो जाओ।" महेंद्र ने कारण बिना बताये कहा और जयंत के सवाल को टाल गया।

जयंत कुछ कहे बिना लेट गया।

आधी रात के बाद जयंत जाग पड़ा। उसे नूपुरों की छमछम धीमी ध्वनि में सुनायी पड़ी। उसने मुड़कर देखा कि महेंद्र चादर ओढ़कर भय के मारे थरथर कांप रहा है और कुछ मंत्र बोल रहा है। थोड़ी देर बाद नूपुरों की छमछम बंद हो गयी।

सबेरे, जयंत ने महेंद्र से नूपुरों की छमछम के बारे में पूछा।

"तो क्या वह ध्वनि तुम्हें भी सुनायी पड़ी? क्या बताऊँ? एक महीने से यह कामिनी पिशाचिनी इधर-उधर घूमती-फिरती है। घर खाली भी नहीं कर सकता, क्योंकि भला अपने घर को छोड़कर कहीं और कैसे जाऊँ? उस पिशाचिनी से छुटकारा पाने के लिए भूतवैद्यों की सहायता ली। ताबीज़ भी बांधे। इनपर बहुत खर्च किया। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ।"

"अरे यार, भूत, पिशाचों पर इन दिनों में भी तुम विश्वास करते हो?" जयंत ने पूछा।

"करूँ नहीं तो क्या करूँ। जब से उन नूपुरों की ध्वनि सुनायी पड़ने लगी है, तब से घर में अशुभ ही अशुभ हो रहा है," महेंद्र ने कहा। "तो इस विषय पर हमारे दोस्तों से बात नहीं की? उनसे उपाय पूछ सकते थे। असलियत का पता आसानी से लग जाता।" जयंत ने पूछा।

"इस विषय को लेकर उनसे चर्चा करूँ तो

वे मुझे कायर, अन्धविश्वासी, गंवार, पुरानपंथी आदि ठहरायेंगे और मेरा मज़ाक उड़ाएँगे। इसी डर से चुप हूँ।" महेंद्र ने कहा।

दूसरे दिन जयंत शिवदास के घर में ठहरा। उस दिन की रात को भी उसने नूपुरों की छमछम सुनी। उस रात को वह छमछम की ध्वनि थोड़ी-बहुत स्पष्ट थी।

दूसरे दिन जब जयंत ने इसके बारे में शिवदास से पूछा तो उसने कहा, "ज़ोर से मत बोलो। नूपुरों की छमछम के बारे में मैंने मंदिर के पुजारी से पूछा। पुजारी ने बताया कि वह छमछम महालक्ष्मी की है और वह घर में प्रवेश करने से हिचकिचा रही है। उसे प्रसन्न करने के लिए उन्हीं से विशेष विधियों से अनुष्ठान और मूल्यवान सामग्रियोंवाली पूजाएँ भी करा रहा हूँ।"

जयंत ने इसपर कोई टिप्पणी नहीं की।

"यह बात हमारे दोस्तों से किसी भी हालत में मत बताना," शिवदास ने इस ढंग से यह कहा, मानों कोई बड़ा रहस्य बता रहा हो।

तीसरी रात जयंत ने गुणशेखर के घर में बितायी। उस रात को नुपूरों की छमछम और निकट से सुनायी पड़ी। जयंत ने देखा कि गुणशेखर अब भी जागा हुआ है, तो उसने उससे कहा, "नूपुरों की छमछम सुनायी पड़ रही है न?"

"हाँ, इधर कुछ दिनों से मैं भी वह ध्वनि सुनता आ रहा हूँ। हमारे घर के पिछवाड़े में ज़मीन के नीचे निधि है। वह बाहर प्रकट होने को आतुर है। यह उसीकी आवाज़ है। इसीलिए छिपे-छिपे पिछवाड़े को खुदवा रहा हूँ। परंतु, वह निधि हाथ नहीं आ रही है। यह बात किसी से भी मत बताना," गुणशेखर ने धीमे स्वर में कहा।

जयंत लेटे-लेटे सोचने लगा कि उसके दोस्तों ने नूपुरों की छमछम के विषय में जो कारण बताये, वे सच नहीं हैं, बल्कि इसके पीछे अवश्य ही कोई दूसरा कारण होगा। वे सब अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार उनकी अपनी गढ़ी हुई कल्पनाएँ हैं। वे असली कारण जानने की बजाय अपनी पूर्व धारणाओं के आधार पर कुछ कहानी गढ़ लेते हैं। असली कारण जानने के लिए पूर्वाग्रहों से ऊपर उठ कर सोचना होगा।

चौथे दिन जब वह मनोहर के घर में था, तब उस रात को नूपुरों की छमछम और निकट से सुनायी पड़ी। जयंत ने देखा कि जैसे ही यह

आवाज़ हुई, मनोहर बग़ल के कमरे में गया। फिर थोड़ी देर बाद वह छमछम की ध्वनि बंद हो गयी। मनोहर लौटकर आया और चुपचाप पलंग पर लेट गया।

सवेरे, जयंत ने मनोहर से नूपुरों की छमछम की ध्वनि के बारे में पूछा, तो मनोहर ने सिर झुकाकर कहा, ''तुम तो जानते ही हो कि हाल ही में मेरी शादी हुई है। मेरी पत्नी को नींद में चलने की बीमारी है। बिना सोचे कब तक मैं भी जागा रहूँगा और उसकी रखवाली करूँगा, इसलिए मैंने उसके पैरों में नूपुर बांधने की आदत डाल दी। जब वह नींद में चलने लगती है, तब उन नूपुरों की छमछम की आवाज़ सुनकर मैं जाग उठता हूँ। उठकर उसे ले आता हूँ और पलंग पर सुला देता हूँ। एक बार सुला दिया, तो वह जागती ही नहीं।''

''तो तुम्हारी पत्नी के नूपुरों की छमछम की ध्वनि दिन में क्यों सुनायी नहीं देती?'' जयंत ने संदेह व्यक्त किया।

''नूपुर पहनना वह बिलकुल पसंद नहीं करती। इसलिए उसके सोने के बाद नूपुर बांधता हूँ और उसके जागने के पहले ही निकाल देता हूँ। अभी-अभी तो हमारी शादी हुई है। धीरे-धीरे उसे समझाऊँगा और नूपुर पहनने की आदत डालूँगा।'' मनोहर ने कहा।

जयंत को नूपुरों की ध्वनि की असलियत का पता लग गया। दूसरे दिन जब वह दोस्तों से मिला तो उसने उनसे बताया, ''आपने जो ध्वनि सुनी, वह नहीं तो कामिनी पिशाचिनी की ध्वनि है, न ही महालक्ष्मी की, वह मनोहर की पत्नी के पैरों में बंधे नूपुरों की छमछम है। अब ही सही अंध-विश्वासों से दूर रहो और व्यर्थ ही धन खर्च मत करो। ऐसी स्थिति फिर कभी आ जाये, जो कि हम सब की जिन्दगी में आती रहती है, तो पहले की बनी धारणाओं से मुक्त होकर तर्क संगत बिचार से काम लिया करो। स्वस्थ रहो और शांति से जीओ।''

अपने अविवेक पर दोस्तों ने शर्म के मारे सिर झुका लिया। इसके बाद, एक-दूसरे को देखते हुए ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।
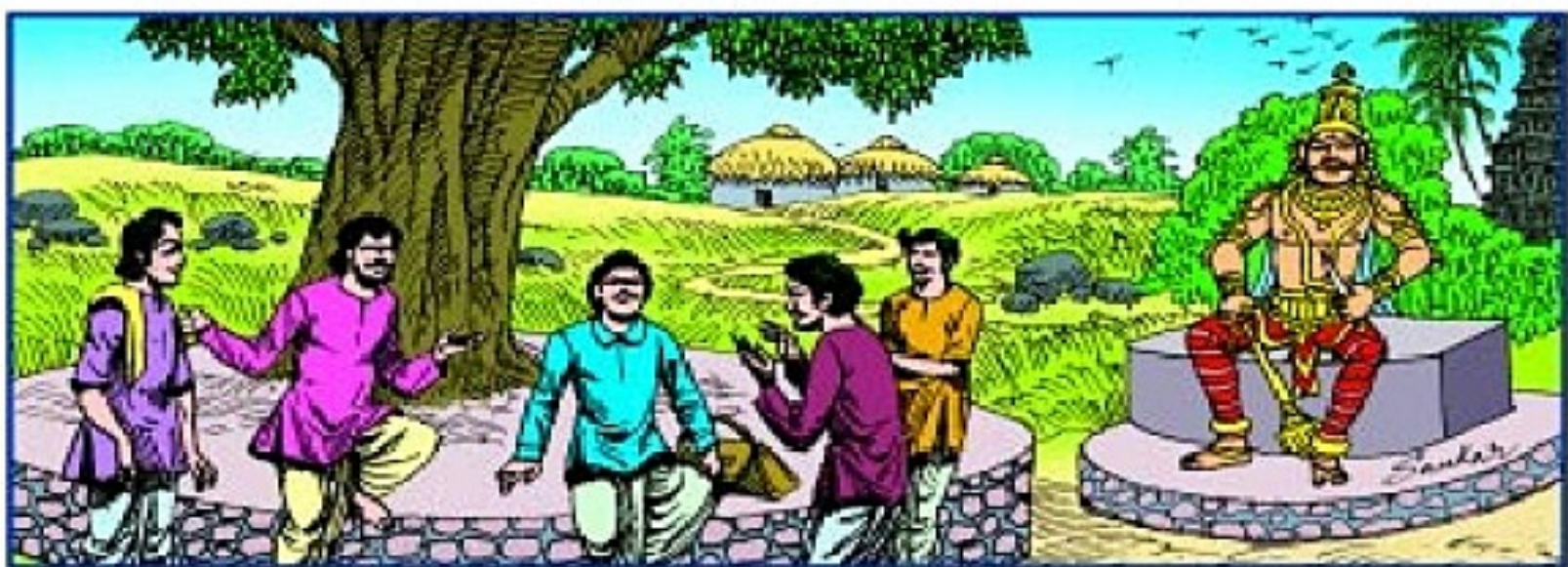
समाचार झलक

अन्तरिक्ष यात्रियों ने फिल्म देखी!

मॉडर्न एयरलाईन्स ने हरेक सीटपर टी.वी.स्क्रीन लगा दी है। मुसाफिरों को 'मेनू' दे दिया जाता है और वे अपनी पसन्द की फिल्म को स्विच ऑन कर सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आई.एस.एस.) के अन्तरिक्ष यात्रियों की हैरी पॉटर की मूवी देखने की बड़ी इच्छा थी। नासा ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए ''हैरी पॉटर ऐण्ड द गॉबलेट ऑफ फायर'' विकीर्ण किया। स्मरण रहे कि स्पेस स्टेशन पृथ्वी से ३५४ कि.मी. ऊपर चक्कर लगा रहा है। क्या संभव नहीं है? तुम्हें आश्चर्य हो सकता है।

भारतीय महिला अन्तरिक्ष यात्री

भारतीय मूल की पैंतीस बर्षीया एस. बनजा शिवसुब्रह्मणियम, जो पेशे से इंजीनियर है, मलेशिया में बस गई है। उसका नाम उन चुने गये चार उम्मीदवारों में से एक है जिन्हें अन्तरिक्ष यात्रा का तथा अगले वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पर ठहरने का प्रशिक्षण दिया जायेगा। अन्य तीनों के साथ, जो उसी देश के सब पुरुष हैं, वह रशियन स्पेस एजेंसी, मास्को मेडिकल तथा टेक्निकल जाँच के लिए गई थी।

न्यूट्रिन प्रश्नोत्तरी-३

१. किस राज्य में भारत की एक मात्र हीरे की खान है?

अ. महाराष्ट्र   आ. मध्यप्रदेश   इ. राजस्थान   ई. कर्नाटक

२. इन नदियों में से कौन सी अरब सागर में गिरती है?

अ. नर्मदा   आ. गोदावरी   इ. कृष्णा   ई. कावेरी

(उत्तर पृष्ठ ६३ पर)

गोल पत्थर की कहानी

विद्यानंदस्वामी बिजयपुर पधारे। उस दिन की शाम को वे नगर की प्रजा से मिलनेवाले थे और प्रवचन देनेवाले थे। बहुत सुंदर रूप से सजाये गये मंच की दायीं ओर एक विशेष आसन का प्रबंध किया गया। ज़मींदार जगपति राय ने विद्यानंद स्वामी को अपने गृह में आतिथ्य ही नहीं दिया, बल्कि उनके उपदे श के लिए आवश्यक धन भी दान में दिया। उन्हीं के लिए इस विशेष आसन का प्रबंध किया गया। पर, जगपति राय उस आसन पर आसीन नहीं हुए। वे जनता के साथ बैठे।

विद्यानंद स्वामी ने इस पर ध्यान दिया और बहुत ही खुश होकर कहा, ''मानव में जो गुण होने चाहिये, उनमें विनय प्रधान है। अगर यह गुण हो तो सहनशक्ति, दैवभक्ति जैसे सद्गुण आप ही आप जुड़ जाते हैं। बड़े लोगों का कहना है कि मानवों को जो संपदा, भवन, पत्नी और संतान उपलब्ध होते हैं, वे सबके सब पूर्व जन्म के पुण्यों के फल हैं। किन्तु उन्हीं पर विश्वास करके हाथ पर हाथ धरे बैठना विवेक नहीं कहलाता। इहलोक और परलोक के सुखों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्न चाहिये। इन सबसे बढ़कर चाहिये, भगवान की कृपा। तभी जीवन का लक्ष्य साधा जा सकता है और सद्गति प्राप्त हो सकती है। तब तक सहनशक्ति का पालन करना आवश्यक है। इन दोनों का आधार है, विनय। चाहे हम किसी भी स्थिति में क्यों न हों, उतार-चढ़ाव का सामना हमें क्यों न करना पड़े, इस विनय का अवश्य पालन होना चाहिये, इसकी आदत डालनी चाहिये। घमंड से दूर रहना चाहिये। उदाहरण-स्वरूप एक गोल पत्थर की कहानी सुनाऊँगा। ध्यान से सुनिये।'' फिर वे यों कहने लगे :

गोदावरी नदी तट के सुंदर प्रदेशों में आम, कटहल, नारियल व केले जैसे तरह-तरह के फल

डा. चक्रपाणि

के वृक्ष हैं। एक बार गोदावरी में बाढ़ आयी। उस बाढ़ में कीचड़ के साथ ऊपर के पहाड़ों से कुछ पत्थर लुढ़कते हुए नीचे आये। लुढ़कते हुए पत्थरों में से एक गोल पत्थर बहता हुआ आया और नदी तट के बगल के नारियल के पेड़ों के बीच में आकर अटक गया। और वहाँ से आगे नहीं जा पाया। क्रमशः बाढ़ का प्रवाह कम होता गया। नारियल सूर्य की कांति के कारण चमकते हुए पत्थर को देखकर चकित रह गये।

एक पके नारियल ने पत्थर से कहा, ''ऐ, तुम कौन हो? कहाँ से आये? यहीं क्यों रह गये?'' गरजते हुए उसने पूछा।

पत्थर मौन रहा। तब एक और पेड़ पर के नारियल ने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा, ''इसकी कहानी मैं खूब जानता हूँ। इसका जन्म पहाड़ों में होता है और प्रवाहित होता हुआ नीचे आता है। प्रवाह के वेग में ये पत्थर छोटे-छोटे टुकड़ों में बदल जाते हैं। यह भी उन टुकड़ों में से एक है। लुढ़कता हुआ यहाँ आया, चोटें सहीं और गोल पत्थर के आकार में दिख रहा है। बेचारा बाढ़ की वजह से हमारे बीच में आकर अटक गया, नहीं तो और चोटें सहते हुए रेत का कण बन जाता और समुद्र में डूब जाता।''

''बेचारे गोल पत्थर, सहनशक्ति की भी एक सीमा होनी चाहिये। हमें देखो, आत्माभिमान से भरे हम, आकाश को छूते हुए कितने आनंद और गर्व के साथ जी रहे हैं।'' एक और नारियल ने कहा। नारियल की इन बातों को सुनकर गोल

पत्थर कुछ कहे बिना चुप रहा। यों कुछ समय बीत गया।

नदी के समीप के एक गाँव में एक शिवालय था। पुजारी एक थाली में नारियल, पुष्प और अगरबत्तियाँ भगवान के सम्मुख रखकर पूजा कर रहा था। नारियल ने अपनी तीनों आँखें खोलीं और भगवान को देखता रहा। काला गोल पत्थर ऊपर चमक रहा था। वह ऊँचे स्थान पर रखा हुआ था।

नारियल को पेड़ों के बीच में अटके गोल पत्थर की याद आयी। वह उसी पत्थर को लेकर सोच ही रहा था कि इतने में गोल पत्थर ने नारियल से कहा, ''ऐ मित्र, उस समय की उन्नत स्थिति व स्वाभिमान कहाँ गये? तुम तो कह रह थे कि सहनशक्ति की भी सीमा होनी चाहिये। मेरी हँसी उड़ाते हुए बता रहे थे कि मैं ऐसी सीमाओं से अनभिज्ञ हूँ, मुझमें स्वाभिमान नहीं हैं, अपमान सहना ही मेरे भाग्य में लिखा है आदि आदि। मुझ पर दया दिखा रहे थे और अपने को अमर, अटल मान रहे थे। पर अब क्या हुआ?''

इतने में पुजारी ने नारियल को अपने हाथ में लिया और पत्थर पर पटककर उसके दो टुकड़े किये। पश्चाताप से भरे नारियल ने कहा, ''मित्र, मुझे क्षमा करना। मैं उस दिन पेड़ पर था, इसलिए अपने को ऊँचा समझ रहा था और तुम्हें गालियाँ देता जा रहा था। लेकिन तुम चुप रहे । अब मेरी बुरी हालत है। यों मैं अपने को समर्पित कर रहा हूँ। हमसे भी ऊँचे पर्वतों में तुमने जन्म लिया, पवित्र गोदावरी में रहे, और पूजा के योग्य बने। तुमने साबित कर दिया कि सहनशक्ति से बढ़कर कोई और गुण नहीं है।'' यों नारियल ने गोल पत्थर से माफी माँगी। उसके बाद शिव को समर्पित किया गया नारियल भी पवित्र हुआ और वह भक्तों में प्रसाद के रूप में बाँटा गया।

विद्यानंद स्वामी ने आगे कहा, ''नदी के प्रवाह में अटके गोल पत्थर की ही तरह मनुष्यों को भी जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है। सब कुछ सहते हुए जो मानव सन्मार्ग पर चलता है, वह किसी न किसी दिन उन्नत स्थिति पाता है और धन्य कहलाता है।''

सगा बेटा नहीं हुआ तो क्या हुआ?

विश्वनाथ सिरिपुर में रहता है। वह अध्यापक है और अपने पेशे की पूजा करता है। विद्यार्थियों को अच्छी तरह से पाठ सिखाता है। साथ ही उन्हें अनुशासन भी सिखाता है। इसलिए विद्यार्थी और उनके माता-पिता उसका बड़ा आदर करते हैं।

विश्वनाथ की पत्नी लक्ष्मी बड़ी ही सुशील है। वह हर विषय में पति का साथ देती है । उसने अपने इकलौते बेटे चैतन्य को बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा।

गाँव की पढ़ाई के बाद चैतन्य शहर गया, वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त की और वहीं अपने लिए नौकरी भी ढूँढ़ ली। और वहीं माता-पिता की अनुमति के बिना ही उसने एक लड़की से शादी भी कर ली।

यह जानकर विश्वनाथ के दिल को बड़ा धक्का लगा। उसने पत्नी से कहा, ''देखा, चैतन्य ने हमसे बताये बिना शादी कर ली। अगर वह हमारी अनुमति माँगता तो हम थोड़े ही मना करते?''

''हमसे बताता तो अच्छा होता। पर उसने बताया नहीं। अब हम कर भी क्या सकते हैं! समय बदल गया है। जो हुआ, भूल जाएँ।'' उसकी पत्नी ने कहा।

उस साल गर्मी की छुट्टियों में विश्वनाथ पत्नी समेत तीर्थ यात्रा पर गया और हरिद्वार में कुछ दिनों तक रहा। एक दिन भगवान के दर्शन के बाद जब वह मंदिर के सामने बैठा हुआ था, तब दस साल का एक बच्चा भीख माँगते हुए उसके सामने आया।

''बेटे, यह तो पढ़ने-लिखने की उम्र है। भीख क्यों माँग रहे हो? तुम्हारे माता-पिता क्या करते हैं?'' विश्वनाथ ने पूछा।

''छः साल के पहले एक नाव की दुर्घटना में मेरे माता-पिता चल बसे। हमारा परिवार ग़रीब है। मैं और मेरे अपाहिज दादा भीख माँगेंगे तभी हमारा पेट भरता है।'' लड़के ने दीन स्वर में कहा।

विश्वनाथ ने बड़े ही प्यार से लड़के को अपने पास बुलाया और पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है?'' उसने कहा, ''मल्लिक'' । विश्वनाथ ने पूछा, ''तुम्हें मैं पढ़ाऊँगा तो पढ़ोगे?'' ''हाँ, हाँ, ज़रूर पढ़ूँगा। तो फिर

मेरे दादा का क्या होगा?'' मल्लिक ने पूछा।

''मैं उनकी देखभाल का पूरा इंतज़ाम करूँगा! कोई कमी आने नहीं दूँगा। पूरी जिम्मेदारी लूँगा। अब बताओ, तुम पढ़ोगे?'' मल्लिक ने खुशी से सिर हिलाया।

इसके बाद विश्वनाथ ने पत्नी से भी अनुमति ले ली। मल्लिक उनके साथ उनके गाँव आया और अच्छी तरह से पढ़ने-लिखने लगा।

समय तेज़ी से गुज़रता गया। दस सालों में मल्लिक ने अच्छी शिक्षा पायी। वृद्ध विश्वनाथ का भी एक दिन निधन हो गया। लक्ष्मी के साथ पूरा गाँव विषाद-सागर में डूब गया। उनका इकलौता बेटा चैतन्य उस समय भी आ नहीं पाया, क्योंकि नौकरी से संबंधित काम पर उसे बहुत दूर के प्रांत में जाना पड़ा। मल्लिक ने ही विश्वनाथ की अन्त्येष्टि क्रियायें कीं।

दो हफ्तों के बाद चैतन्य सिरिपुर आया। जब उसे मालूम हुआ कि उसके पिता ने अपनी पूरी जायदाद मल्लिक के नाम पर लिख दी तो वह क्रोधित हो उठा। इस विषय में माँ से लड़ने-झगड़ने बड़ी तेज़ी से जब वह घर में घुसा तो उसे अंदर से बातें सुनायी पड़ने लगीं। वह दरवाज़े पर ही रुक गया।

''गुरु ने मुझे शिक्षा दी। उस शिक्षा के बल पर कोई नौकरी ढूँढ लूँगा। अब तक आपने मुझे प्यार दिया, शिक्षा दी, आश्रय दिया, आपकी हर तरह से देखभाल करना मेरा कर्तव्य है, मेरी जिम्मेदारी है। गुरुजी ने जो जायदाद दी, उसे आपके बेटे को ही सौंप दूँगा। इसके लिए मुझे आपकी अनुमति चाहिये।'' मल्लिक कह रहा था। उसकी बातें सुनकर चैतन्य समझ गया कि मल्लिक का दिल कितना साफ़ है।

वह अंदर आया और मल्लिक के हाथ पकड़ते हुए कहा, ''तुम भाई के समान हो। जन्म देने मात्र से कोई पुत्र नहीं हो जाता। तुमने साबित कर दिया कि जिसको पाला-पोसा है, वह सगे बेटे से कुछ कम नहीं है। पिता की दी जायदाद तुम ही संभालो। चूँकि माँ मेरे साथ शहर आने के पक्ष में नहीं है, इसलिए सगी माँ की तरह तुम ही उसकी देखभाल करना।''

लक्ष्मी जब तक जीवित रही, तब तक मल्लिक के साथ गाँव में ही रही। मल्लिक ने अपना वचन निभाया। जिस पाठशाला में उसने शिक्षा प्राप्त की, उसी पाठशाला में वह अध्यापक का काम करता रहा और सगे बेटे से भी अधिक लक्ष्मी की देखभाल करने लगा। यों सबकी प्रशंसा का पात्र बना। सगा बेटा नहीं हुआ तो क्या हुआ?

- वि. प्रवीणा, नेल्लूर जिल्ला

चन्दामामा प्रश्नावली-११

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION,
Bangalore

जो सही उत्तर देंगे,
उनमें से एक को २५० रुपये
दिये जायेंगे।*

*सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. एक परिवार में सिर्फ एक ही सदस्य भाग लें, ४ अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ५. लिफ़ाफे पर **चन्दामामा प्रश्नावली-११** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ६. दिसम्बर महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ७. फरबरी महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. ''बुद्धिमान लोग जब कोई अपराध करते हैं, तब वे दण्ड देनेवालों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।'' शिल्पाचार्य की बातें सुनकर राजा ने अपनी ग़लती सुधारी। वह राजा कौन था? किस कहानी का यह अंश है?

२. अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस हम कब मनाते हैं?

३. सिद्धार्थ जब कठोर तपोदीक्षा में थे, तब एक गर्भिणी गोपिका स्त्री ने मनौती माँगी कि अगर उसका पुत्र हुआ तो फिर से वह उनके दर्शन करेगी। उस गोपिका का क्या नाम है?

४. ''अच्छे-बुरे का निर्णय मुख्यतया मन का उद्देश्य होता है, न कि उससे किया जानेवाला कर्म।'' यह धर्म सूत्र किस बेताल कथा में बताया गया है?

५. ''पीढ़ियों दर पीढ़ियों से चले आ रहे कारणों के नाम पर कुछ शासनों को आँख बंद करके अमल में ले आते हैं। इससे कितने ही अनर्थ होते हैं।'' वह कहानी कौन-सी है, जिसमें चेतावनी दी गयी है कि ऐसा करना ग़लत है?

६. यह चित्र किस कहानी का है?

गुजरात की एक लोक कथा

हज्जाम की खुली किस्मत!

सेवाराम एक गरीब हज्जाम था, गरीब, क्योंकि अपनी गृहस्थी के निर्वाह भर वह कमा नहीं पाता था। एक दिन उसने जो कुछ कमाया, वह चावल, दाल और सब्जी के लिए काफी था, लेकिन दूसरे दिन की कमाई से उसकी पत्नी सिर्फ चावल ही खरीद पाई। ऐसे दिनों में वह अपने पति को बेवकूफ, बेकार तथा और भी बहुत-कुछ भला-बुरा सुनाती, जिससे उनकी हालत का अन्दाजा लगाया जा सकता था। शिवानी अक्सर अपनी शादी के पूर्व की जिन्दगी को याद करती, जब उसे खाने-पीने और कपड़ों की कोई कमी नहीं थी

एक शाम को सेवाराम लगभग खाली हाथ लौटा। इसलिए शिवानी तब तक उसका सिर खाती रही, जब तक वह सोने के लिए लेट नहीं गया। पर नीन्द भी उसे बहुत देर तक फटकारती रही। जब उसने यह निश्चय कर लिया कि अग दिन वह क्या करेगा, तब कुछ देर के लिए उसने झपकी ले ली। वह दूसरे दिन जल्दी ही उठ कर और नहा धोकर तैयार हो गया तथा कंघी, कैंची उस्तूरा और केश तेल की थैली लेकर घर से निकल पड़ा। ''मैं काफी धन कमाने के बाद ही लौटूँगा। उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा। उसकी पत्नी दरवाजे पर खड़ी सोचती रही कि उसके पति का ऐसा कहने का तात्पर्य क्या है। उसने उसे वापस नहीं बुलाया।

शिवानी जानती थी कि उसके गाँव में बहुत कम लोग इतने धनी हैं जो हर रोज दाढ़ी बनाने या आये दिन हजामत कराने का खर्च उठा सकते हों और वहाँ के एक मात्र हज्जाम को उसकी सेवा के लिए अच्छी रकम भी दे सकते हों। गाँववाले

आम तौर पर गरीब थे और बची-खुची रकम ही दे सकते थे। अक्सर वे अगली बार देने का वादा कर देते। इसलिए सेवाराम हमेशा गरीब हज्जाम ही बना रहा।

गाँव छोड़ने के बाद वह काफी दूर निकल गया। मार्ग में छायेदार वृक्षों के नीचे वह आराम करने के लिए रुक जाता और यह आशा करता कि कोई राहगीर उसके थैले को देखकर शहर पहुँचने से पहले उससे हजामत बनाने के लिए कहेगा। दुर्भाग्यवश किसी ने ऐसा नहीं कहा। जब रात हो गई तो वह आराम करने के लिए एक लम्बे घने वृक्ष के नीचे लेट गया। थका-मांदा होने के कारण उसे तुरन्त नींद आ गई।

उस पेड़ पर एक भूत रहता था। सेवा राम की खर्राटें सुनकर वह इस उम्मीद से नीचे उतरा कि उसे अच्छा भोजन मिलेगा। उसने सोचा कि वह पहले उसे डरायेगा, फिर उसे पकड़ेगा। उसकी जोर-जोर की चीख-चिल्लाहट सुनकर भी सेवा राम की नींद नहीं खुली। इसलिए भूत ने उसे उसका कन्धा पकड़कर हिलाया। जब उसने देखा कि आदमी धीरे-धीरे अपनी आँखें खोल रहा है तब भूत ने अपना चेहरा विकृत कर डरावना बना लिया। और उसका गला घोंटते हुए वह चीखा, ''मुझे तुम्हें खाते हुए बड़ी खुशी हो रही है। हा हा!''

सेवाराम इतना थका हुआ था कि उसने मरने की चिन्ता नहीं की। यदि भाग्य में भूत से ही मरना लिखा है तो वह इच्छापूर्वक मरने को तैयार

है। लेकिन अचानक उसे पत्नी की याद आई। यदि वह मर गया तो शिवानी अपनी देखभाल कैसे करेगी। यह सोचकर वह चिन्ता करने लगा। उसे कम से कम उसके लिए जीवित रहना होगा। अचानक उसे एक उपाय सूझा। ''बेवकूफ न बनो।'' उसने हाथ हिलाते हुए कहा मानो वह कह रहा हो कि चलते बनो! ''क्या तुम उस भूत को देखना चाहते हो जिसे मैंने आखिर में पकड़ा है?'' सेवाराम ने अपना थैला खोला और उसे दर्पण दिखाते हुए कहा। ''इसे देखो ! मेरे थैले में और भी अनेक पड़े हैं।''

भूत दर्पण में घिनौने चेहरे को देखकर भयभीत हो गया। ''ईय्यू !'' डर से वह चीख पड़ा। ''उस भयानक भूत के साथ थैले में मुझे न रखो!'' उसने सेवाराम का हाथ पकड़ने की कोशिश करते हुए उससे अनुरोध किया।

हज्जाम, जो अभी तक दर्पण को हाथ में लिये हुए था, सख्ती से बोला, ''ठीक है, किन्तु सुबह होने तक तुम्हें ढेर सारे रत्न लाकर देने होंगे।'' भूत तुरन्त वहाँ से गायब हो गया। सेवाराम ने आइने को थैले में रख लिया और मुर्गे की बांग का इन्तजार करने लगा। यह देखकर वह चकित रह गया जब थोड़ी देर में ही भूत एक गठरी के साथ वापस आया और उसे खोलकर उसके सामने चमकते रत्नों को फैला दिया।

''ठीक है, अब मैं तुम्हें आजाद कर रहा हूँ। मैं अभी शहर जाऊँगा और शाम तक वापस आ जाऊँगा।'' सेवाराम ने कहा। वह फिर शहर की ओर चल पड़ा। वह रत्नों के बदले नकद धन प्राप्त करना चाहता था। लेकिन उन्हें बेचना नहीं चाहता था।

इसलिए शहर में वह एक गिरवी रखनेवाले महाजन के पास गया और बोला, ''इन रत्नों को रखकर हमें कुछ नकद रकम दे दीजिए। एकमहीने के बाद आपकी रकम लौटाकर इन्हें वापस ले जाऊँगा।'' गिरवीवाले ने उन रत्नों को जाँच-पड़ताल के बाद जब सही पाया तो सेवाराम को उनके बदले अच्छी रकम दे दी।

उसे बहुत जोरों से भूख लग रही थी। इसलिए उसने एक भोजनालय में जाकर भरपेट खाना खाया। फिर उसने एक घर के सुनसान बरामदे में पाँव पसार कर सो गया। शाम तक सोये रहने के

बाद वह तरोताजा लग रहा था। वह फिर उसी पेड़ की ओर चल पड़ा, जहाँ उसे मुफ्त में मूल्यवान रत्न मिल गये थे।

तब तक काफी अन्धेरा हो चुका था। वह पेड़ के नीचे अपने थैले पर हाथ रखकर लेट गया। भूत उसे देखकर आ सकता है, यह सोचकर वह जागता रहा।

तभी उस पेड़ के भूत ने पड़ोसी पेड़ के भूत को बुलाकर अपनी पिछली रात की उसे कहानी बताई। फिर दोनों ने मिलकर यह योजना बनाई कि हज्जाम से रत्नों को वापस कैसे लें और उसके आइने को कैसे चुरायें जिसमें उन्हीं के जैसे डरावने जीव छिपे हैं।

सेवाराम बहुत सावधान था। उसने दोनों भूतों को अपना थैला थोड़ा-सा खींचने दिया। उसके बाद वह उछलकर उठ गया और जल्दी से थैला खोलकर उसमें से आइना और कैंची निकाल ली। उसके एक हाथ में आइना और दूसरे हाथ में कैंची थी। वह दोनों भूतों को लक्ष्य करके कैंची को चलाते हुए चक-चक आवाज करने लगा और और आइने को उनके चेहरों के सामने रख कर दिखाता रहा। दोनों भूत कैसे डर रहे थे, चलती हुई कैंची की तेज गति से या आइने में अपने भयानक रूप को देख कर यह निश्चित नहीं था। पर हज्जाम का ताण्डव नृत्य-सा अभिनय ही उन्हें डराने के लिए काफी था। वे भागकरपेड़ पर चढ़ने ही वाले थे कि सेवाराम चिल्लाया, "ठहरो, मेरी बात सुनो। तुममें से कोई सुबह तक सोने के सिक्के लाकर नहीं देगा, तब तुम्हारा साथी हमारे थैले में अन्य घिनौने प्राणियों के साथ बन्द कर दिया जायेगा।"

अब भूत नं.२ दौड़ता हुआ चला गया। सेवाराम अट्टहास करने लगा, और अपने हाथों में आइना तथा कैंची लेकर ताण्डव नृत्य करता रहा। भूत नं.१ अपने साथी को जल्दी वापस नहीं आते देखकर घबराने लगा। पर सुबह होने से थोड़ी ही देर पहले आ गया। उस दिन सेवाराम को यह देखकर आश्चर्य नहीं हुआ कि उसके सामने की गठरी में सोने के सिक्के भरे पड़े हैं। सेवाराम तुरन्त

उन्हें अपने थैले में डाल लिया। उसने, जो अभी तक ''हथियारों'' से लैस था, भूत से कहा, ''सुबह हो चुकी है। मैं अब चलूँगा। शाम को फिर आऊँगा। यदि तुम दोनों का बर्ताव ठीक हुआ तो मैं अपने थैले के भयंकर जन्तुओं को मुक्त कर दूँगा। इसलिए रात होने तक मेरा इन्तजार करो।''

उसने अपना आइना और कैंची थैले में रख लिये और वहाँ से चल पड़ा। सुबह हो चुकी थी और भूतों ने महसूस किया कि वे दिन की रोशनी में ठहर नहीं पायेंगे। आज सेवाराम शहर कीओर न जाकर अपने गाँव की ओर मुड़ गया। शिवानी सेवाराम को दरवाजे पर देखकर चकित रह गई, क्योंकि उसे यह विश्वास था कि इतनी जल्दी वह लौट कर नहीं आयेगा। वह अवश्य ही कहीं दूर के शहर में जाकर कठिन परिश्रम से धन कमायेगा और काफी धन जमा करने के बाद ही घर लौटेगा। इसमें कम से कम एक साल तो निकल ही जायेगा।

सेवाराम की दो दिनों के अनुभव की कहानी सुनकर शिवानी अवाक् और स्तम्भित रह गई। उसने मन ही मन अपने पति की बुद्धि और साहस की सराहना की और कहा, ''तुम दुनिया भर में सबसे बहादुर और सबसे चतुर व्यक्ति हो।''

''इन शब्दों को सुनने के लिए मैं कितने अरसों से इन्तजार कर रहा हूँ'', सेवाराम ने कहा जो अब गरीब हज्जाम नहीं था।

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - १२

महान राजकुमार का अन्तिम सद्‌भावना प्रदर्शन

सम्राट शाहजहाँ के चार बेटे थे। सबसे बड़ा था, दारा शुकोह। यह अद्‌भुत युवक, अन्य राजकुमारों से अलग, सत्य का प्रचण्ड जिज्ञासु था। उसने वेदों तथा उपनिषदों का तीव्र उत्साह के साथ अध्ययन किया था और कुछ शास्त्रों का अरबी में अनुवाद भी किया था। वह तत्कालीन प्रसिद्ध विद्वानों के साथ दर्शन शास्त्र पर चर्चा करते कभी थकता नहीं था। उसे न तो आमोद-प्रमोद में रुचि थी, और न राजनीति में। यद्यपि वह वीर और बलशाली था, फिर भी उसने सैनिक शक्ति से कीर्ति हासिल करना कभी नहीं पसन्द किया। वह अपने शिष्टाचार से सब का मन मोह लेता था और अपनी हाजिर-जवाबी और बुद्धि से हरेक को प्रभावित कर लेता था। जरूरतमन्दों को पैसे और पदार्थ से उदारतापूर्वक मदद करना उसका स्वभाव था।

जैसे-जैसे वैदिक शास्त्रों में उसकी रुचि बढ़ने लगी और विद्वान पंडितों के साथ समय बिताने लगा, कट्टर दरबारी उससे क्रोधित रहने लगे। सम्राट शाहजहाँ उसे सबसे ज्यादा प्यार करते थे और उस पर विश्वास करते थे। बुद्धिमान दरबारियों को उस युवक में उसके यशस्वी परदादा महान अकबर का प्रतिबिम्ब झलकता था।
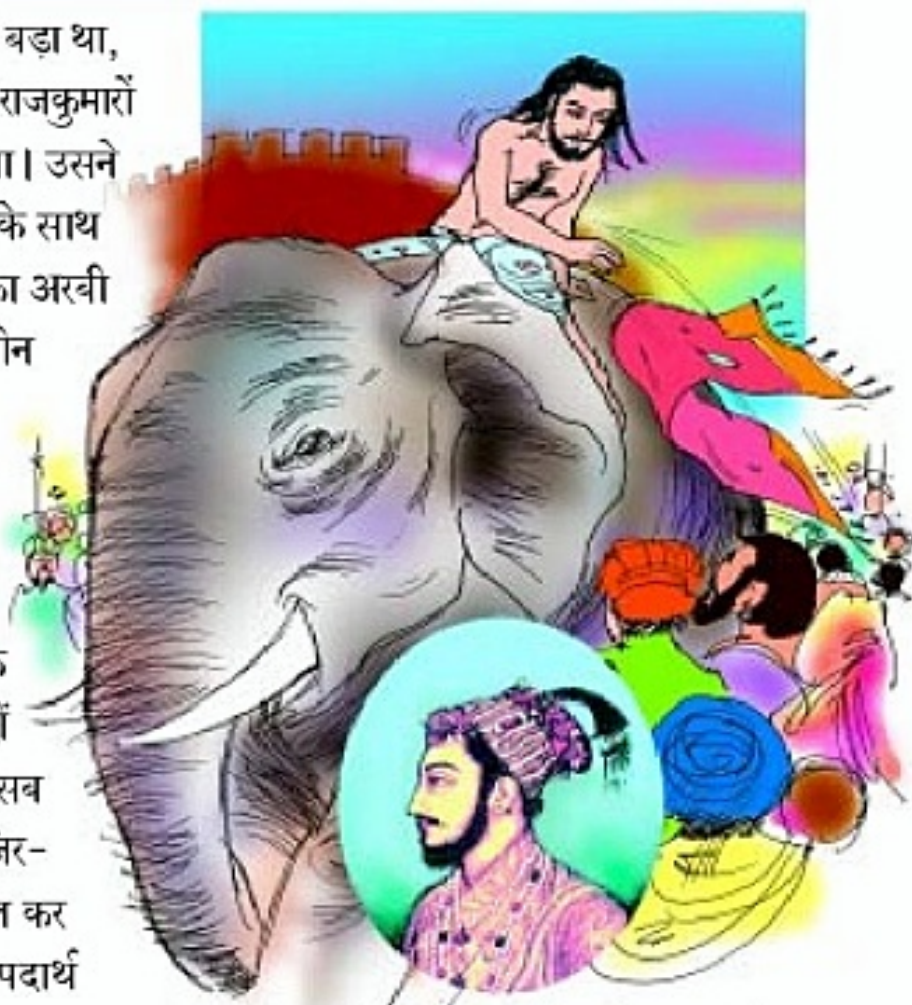
कट्टरपंथियों ने शाहजहाँ के अन्य तीनों बेटों के मन में उसके प्रति नफरत भरना शुरू कर दिया। इस स्थिति से लाभ उठाने के लिए शाहजहाँ का तीसरा बेटा औरंगजेब तैयार था जो अपनी

महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए कुछ भी घृणित कार्य करने में संकोच नहीं करता था। जब शाहजहाँ सन् १६५७ में बीमार हो गये और यह विश्वास किया जाने लगा कि सम्राट के बाद दारा शुकोह गद्दी का वारिस होगा, तब औरंगजेब सबसे छोटे राजकुमार मुराद को साथ लेकर गद्दी पर कब्जा करने के लिए दिल्ली की ओर कूच कर गया। दारा ने पिता के समर्थन से उसका सामना किया किन्तु वह एक एक करके तीन युद्धों में हार गया। औरंगजेब ने अपने पिता को कैद में डाल दिया और अपने को सम्राट घोषित कर दिया। दूसरे बेटे सुजा ने भी गद्दी पर कब्जा करना चाहा किन्तु अरकन में उसकी मौत हो गई। सीधे सादे मुराद को, जिसे आधा साम्राज्य देने का औरंगजेब ने वादा किया था, उसे कैदी बना लिया और उसका सिर काट डाला।

राजकुमार दारा को एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ा और अपनी पत्नी को खो देना पड़ा। अन्त में, उसने जीवन खां नाम के एक अफगान सरदार की शरण ली। एक बार शाहजहाँ ने जीवन खाँ को हाथी से कुचल कर मारने की सजा दी थी तब दारा ने अपने पिता को मनाकर उसे मौत से बचाया था। लेकिन नमकहराम जीवन खां ने दारा को औरंगजेब के हाथ सौंप दिया। दारा को कैदी बनाकर आगरा लाया गया।

उसे, जो साम्राज्य का सही उत्तराधिकारी था, एक थके माँदे हाथी पर बिठाकर आगरा की गलियों में घुमाया गया, जिसे हजारों लोगों ने देखा और हमदर्दी जाहिर की। किन्तु उसकी बदकिस्मती पर पछताने के अलावा वे कुछ न कर सके। एक फकीर ने पुकार लगायी, "हे दरियादिल शाहजादे, तुमने कितनी बार हमें खैरात दी। यह मेरे लिए कितना दर्दनाक नजारा है कि अब मुझे देने के लिए तुम्हारे पास कुछ नहीं है।"

आह! दारा के पास चिथड़ों और एक शॉल के अलावा सचमुच कुछ नहीं था। उसने फकीर को सलाम किया और तुरन्त अपना शॉल उतार कर उसके ऊपर फेंक दिया। दर्शकों ने मन ही मन उसकी महिमा का गीत गाया और आँसू बहाये। उन सब ने अपने प्रिय राजकुमार को आखिरी बार देखा। औरंगजेब ने उस पर झूठा मुकदमा चलाया और कुछ कट्टरपंथियों ने उसे फाँसी की सज़ा दी। सन १६५९ में ३० अगस्त को उसका सिर काट दिया गया। ***(एम.डी.)***

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-९ के उत्तर :

१. सर्वत्र व्याप्त।
२. हेरा देवी।
३. पपेन।
४. चेन्ना।
५. कोचीन का जवाहरलाल नेहरू अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम।
६. डेरियन।
७. बादलों तक बढ़ गई नाक अन्य देशों (जापान) की अनुश्रुत कथाएँ।

मूल्यवान स्मारक

शिव वर्मा बिदिशा राज्य का शासक था। उसके शासन काल में प्रजा सुखी थी। उस वृद्ध राजा के मन में एक विचित्र इच्छा पैदा हुई। उसने फ़ौरन अपने आस्थान के चार मंत्रियों को बुलाया और कहा, ''मैं चाहता हूँ कि प्रजा मुझे शाश्वत रूप से याद रखे। वे कभी भी मुझे न भुलाएँ। वे मेरे सुशासन की सदा प्रशंसा करते रहें। इसके लिए एक स्मारक का निर्माण करवाना चाहता हूँ। आप लोग बताएँ कि वह स्मारक कैसा हो?''

विष्णु शर्मा नामक एक वृद्ध मंत्री ने कहा, ''महाराज, मूल्यवान संगमरमर के पत्थरों से एक अद्भुत मंदिर का निर्माण हो।''

''संगमरमर के उस मंदिर में मूल्यवान रत्नों की भरमार हो तो प्रजा जब-जब उन्हें देखेगी, तब-तब वे आपके वैभव की याद करेगी, प्रशंसा करेगी और अपने को धन्य समझेगी।'' दूसरे मंत्री अनंत शर्मा ने सलाह दी।

''उस मंदिर में आपकी सुवर्ण प्रतिमा का प्रतिष्ठापन हो तो प्रजा को लगेगा कि आप अब भी जीवित हैं।'' तीसरे मंत्री शिव शर्मा ने कहा।

उन तीनों मंत्रियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। परंतु चौथे मंत्री मणि शर्मा चुप बैठे थे। तब शिव वर्मा ने उनसे पूछा, ''आप तो मौन हैं। बताइये, इस विषय में आपका क्या अभिप्राय है?''

''तीनों मंत्रियों के अभिप्राय आपके वैभव को सूचित करते हैं। आप तो जानते ही हैं कि समय सदा एक जैसा नहीं होता। भविष्य में किस-किस प्रकार के परिवर्तन होते रहेंगे, बता नहीं सकते। उनसे हम अनभिज्ञ हैं। तिसपर यह कलियुग है। कुछ लोगों का मानना है कि गुज़रा काल ही सत्यकाल है। कुछ यह विश्वास करते हैं कि भविष्य ही मानव जाति के लिए शुभप्रद होगा। काल जो भी हो, सामान्य प्रजा की भलाई

रमेश गर्गी

के लिए काम किये जाएँ तो अच्छा होगा। प्रजा उन्हीं कामों को याद रखेगी। अतः मेरा अभिप्राय है कि तीनों मंत्रियों के विचारों के अनुसार संगमरमर के पत्थरों से मंदिर का निर्माण किया जाए और उस स्मारक के चारों ओर तरह-तरह के पुष्पों के फल के वृक्षों से भरा एक बगीचा हो। उनके बीच में मुसाफिरों के लिए विश्राम गृह हों, जहाँ वे अपनी थकावट को दूर कर सकें।'' मणि शर्मा ने स्पष्ट शब्दों में अपना विचार व्यक्त किया।

महाराज को मणि शर्मा का विचार सही लगा। उन्होंने कहा, ''मणि शर्मा, आपने सही बताया। जीवन एक बुदबुदे के समान है। पता नहीं, और कब तक जीवित रहूँगा। प्रजा के हित के कामों को तुरंत शुरू कर देना चाहिये। उत्तरी दिशा में प्रवाहित हो रही, भवतारिणी नदी और नगर के बीच के प्रदेश में सुंदरवन का निर्माण हो और वहाँ पौधों को रोपने का काम तुरंत शुरू किया जाए।'' महाराज ने आनंद भरे स्वर में आज्ञा दी।

राजा की आज्ञा के अनुसार मंत्री मणि शर्मा की निगरानी में दूसरे ही दिन पौधों को रोपने का काम शुरू हो गया। इसके, एक साल के अंदर राजा का निधन हो गया। राजा को दिये वचन के अनुसार बन के बीच में संगमरमर पत्थरों से मंदिर का निर्माण किया गया और उसमें राजा की सुवर्ण प्रतिमा का प्रतिष्ठापन हुआ।

साल गुजर गये। चारो मंत्री भी चल बसे। क्रमशः स्मारक मंदिर भी उजड़ गया। राजा की सुवर्ण प्रतिमा की चोरी हो गयी, साथ हीमणि व रत्न भी।

पर, मणि शर्मा की कल्पना के अनुसार जो सुंदरवन बना, वह अब भी हरा भरा है। उन्होंने पथिकों के लिए छोटे-छोटे जिन विश्राम गृहों की व्यवस्था की, उनमें ठहरकर वे अब भी अपनी थकावट को दूर कर रहे हैं। वहाँ के वृक्षों की छाया में विश्राम ले रहे हैं। सुंदरवन के फूलों व फलों को उपयोग में ला रहे हैं। इतनी लंबी अवधि के बाद भी प्रजा राजा शिव वर्मा का स्मरण कर रहे हैं। उन्हें लग रहा है कि मानों शिव वर्मा जीवित हैं और उनकी सेवा में लगे हुए हैं।

उँच-नीच

ब्रह्मदत्त जब काशी राज्य का शासक था, तब बोधिसत्व ने सिंह के रूप में जन्म लिया। वह सिंह अपनी पत्नी समेत एक पर्वत की गुफ़ा में रहा करता था। एक दिन सिंह को बड़ी भूख लगी। वह पर्वत पर से नीचे कूदा। पर्वत के नीचे के एक सरोबर के पास हरी घास से भरे मैदान में उसने हिरनों व खरगोशों को देखा। सिंह गरजता हुआ उनकी तरफ़ दौड़ा। दौड़ते समय वह सरोबर के पास एक दलदल में गिर गया। इतने में खरगोशों और हिरनों ने उसे देख लिया और वे वहाँ से भाग गये।

दलदल से सिंह बाहर आने की कोशिश करने लगा। पर उससे संभव नहीं हो पा रहा था। इसलिए वह वहीं रह गया और देखने लगा कि उसकी रक्षा करनेवाला क्या कोई उधर से गुज़रेगा।

भूख के मारे तड़पते हुए सिंह को एक हफ्ते तक वहीं रहना पड़ा। एक हफ्ते के बाद बग़ल ही के सरोबर में पानी पीने एक सियार वहाँ आया। पर सिंह को देखते ही वह घबराकर रुक गया।

सिंह ने सियार से कहा, ''भैय्या सियार, हफ्ते भर से इस दलदल में फंसा हूँ। ज़िन्दा रहने की कोई उम्मीद नहीं है। किसी प्रकार से मुझे बचा लो।''

''तुम बहुत भूखे हो। मुझे खा जाने में आनाकानी नहीं करोगे। कैसे तुम्हारा विश्वास करूँ?'' सियार ने अपना संदेह व्यक्त किया।

''जिसने मेरी जान बचायी, भला उसे मैं कैसे खा जाऊँगा। मुझे इस दलदल से बाहर निकालोगे तो जन्म भर तुम्हारा आभारी रहूँगा। मेरी बात का विश्वास करो।'' सिंह ने कहा।

सियार ने सिंह की बातों का विश्वास किया। वह सूखी लकड़ियाँ समेटकर ले आया और उन्हें दलदल में फेंका। उनपर सिंह ने अपने पैर जमाये और बड़ी मुश्किल से बाहर आया।

फिर दोनों मिलकर शिकार करने जंगल में गये। सिंह ने एक जंतु को मार डाला। दोनों ने मिलकर उसे खा लिया।

"अब से हम दोनों भाई हैं। अब हमें अलग-अलग जगह पर रहने की क्या ज़रूरत है? अपने परिवार को भी मेरी गुफ़ा में ले आओ। सब मिलकर रहेंगे।" सिंह ने कहा। सियार ने सिंह की बात मान ली और पत्नी को भी गुफ़ा में ले आया।

सियार को लगा कि सिंह के साथ रहने से उसका गौरव बढ़ जायेगा। इसीलिए उसने सिंह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। परंतु, वह जानता था कि अपनी जाति से दूर रहने से उसे कैसे-कैसे कष्टों का सामना करना पड़ेगा। सिंह ने भी सियार के त्याग को भली-भांति समझ लिया और हर विषय में उसका साथ देने लगा। कभी भी उसका दिल नहीं दुखाया। यों दिन गुज़रते गये।

सिंह, सियार को बहुत चाहता था, पर सिंह की पत्नी सियार की पत्नी को नहीं चाहतीथी। उसका मानना था कि वह ऊँची जाति की है और सियार की पत्नी निम्न जाति की। सियार की पत्नी ने शेरनी केइस दावे को स्वीकार कर लिया, इसलिए दोनों परिवारों में झगड़े नहीं होते थे। जब दोनों पत्नियों ने बच्चों को जन्म दिया, तब वे बच्चे बड़े होकर एक साथ खेलने-कूदने लगे। शेरनी से यह देखा नहीं गया।

सिंह और सियार के बच्चों को यह मालूम नहीं था कि दोनों में एक बड़ा है और दूसरा छोटा। वे खुलकर खेलने लगे। एक-दूसरे को चाहने लगे। ऊँच-नीच की भावना उनमें कभी नहीं आई।
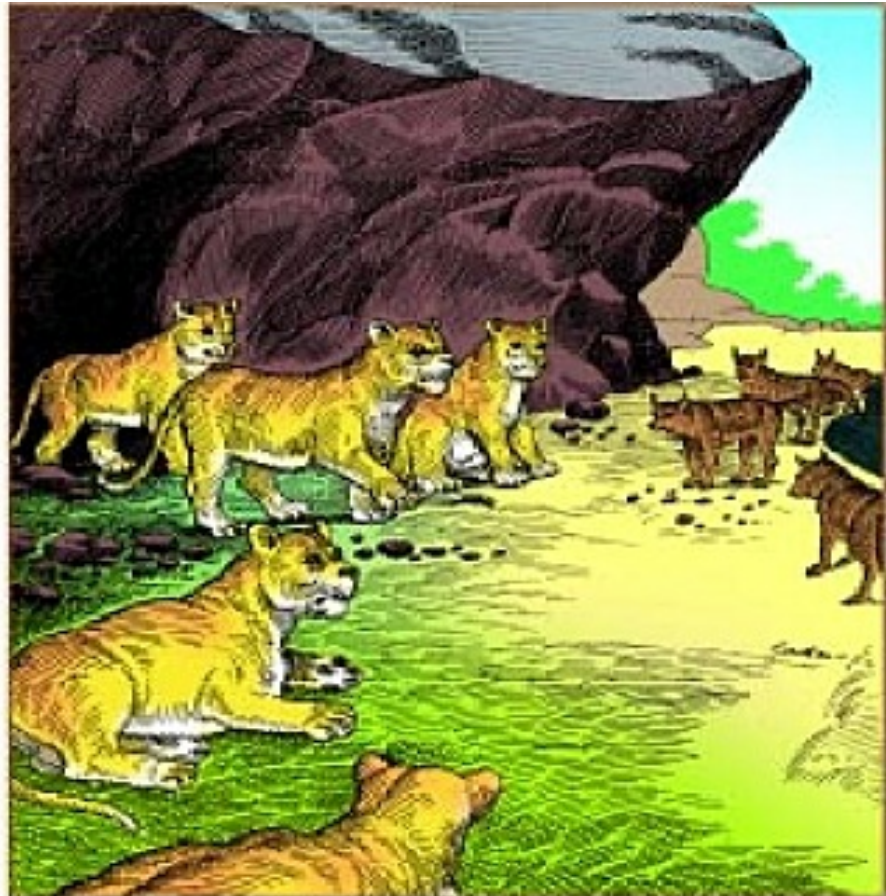
शेरनी से यह सहा नहीं गया। उसने एक दिन अपने बच्चों से कहा, "हम ऊँची जाति के हैं। तुम्हें सियार के बच्चों से इस तरह मिलकर खेलना नहीं चाहिये। उनसे दूर ही रहना। उनकी और हमारी बराबरी ही नहीं।"

सिंह के बच्चों पर माँ की बातों का असर होने लगा। वे सियार के बच्चों के साथ लापरवाही बरतने लगे, खेलते समय उनके साथ अन्याय करने लगे और बारंबार यह कहने भी लगे, "हम उच्च जाति के हैं। हम तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं। हम जो भी कहें, तुम्हें उसका विरोध करना नहीं चाहिये। तुम नीच जाति के हो, इसलिए हमारी गालियाँ भी तुम्हें सहनी होंगी।"

सियार की पत्नी ने एक दिन पति से शेरनी की शिकायत की और उसके व्यवहार के बारे में बताया।

दूसरे दिन जब सियार सिंह के साथ शिकार करने जा रहा था, तब उसने सिंह से कहा, "तुम्हारी जाति उच्च जाति है। हम सामान्य जाति के हैं। इसलिए हमारा साथ-साथ रहना अच्छा नहीं। हम अपनी जातिवालों के साथ रहेंगे।"

अपने मित्र में इस आकस्मिक परिवर्तन पर उसे आश्चर्य हुआ और उसने इस परिवर्तन का कारण पूछा। सियार ने सब कुछ सविस्तार बताया।

रात को गुफ़ा में लौटते ही सिंह ने सिंहनी से कहा, "मालूम हुआ कि तुम सियार के बच्चों से घृणा करते हो।"

"हाँ, हमारे बच्चों का उस निम्न जाति के बच्चों के साथ खेलना-कूदना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। पता नहीं, इस सियार ने आप पर क्या जादू कर डाला। जब देखो, आप उसकी तरफ़दारी करने लगते हैं। साफ़-साफ़ कह देतीहूँ कि उनके बच्चों को हमारे बच्चों के साथ खेलना नहीं चाहिये।" सिंहनी ने कहा।

"अब सब कुछ मेरी समझ में आ गया। जानना चाहती हो न कि सियार ने मुझपर क्या जादू किया, तो सुनो। याद है, एक बार एक हफ्ते भर तक मैं घर नहीं आया? उस हफ्ते भर भूख से तड़पता हुआ दलदल में फंसा रहा। जब मैं मरने ही जा रहा था, तब इस सियार ने मेरी जान बचायी। उस दिन अगर यह सियार मेरी जान नहीं बचाता तो मैं कभी का मर गया होता। यह संतान भी नहीं होती। प्राण की जो भिक्षा देते हैं, उनके प्रति ऊँच-नीच का भाव दिखाना, अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना बड़ा पाप है। उनका अपमान करना अपने ही बंधुओं का अपमान कराने के समान है।" सिंह ने कहा।

सिंह की पत्नी को अपनी ग़लती का एहसास हुआ और उसने सियार की पत्नी से क्षमा माँगी।

इसके बाद पीढ़ियों तक सिंह और सियार की संतान उसी गुफ़ा में मिल-जुलकर सुखी जीवन बिताती रही।

रामायण

थोड़ी देर भरत पिता की मृत्यु पर रोता रहा। फिर उसने पूछा, ''क्या माँ, उन्होंने अन्तिम क्षण में कुछ कहा था? उन्होंने क्या कहा था?''

''राम, लक्ष्मण, सीता... कहते कहते, उन्होंने प्राण छोड़ दिये।'' कैकेयी ने कहा।

भरत ने आश्चर्य से पूछा, ''यह क्या? राम, सीता, लक्ष्मण क्या उनके पास नहीं थे? वे कहाँ गये थे?''

''वे तो वनवास के लिए चले गये हैं न? राम, जब बल्कल वस्त्र पहनकर, जंगल जा रहे थे तो सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ चले गये।'' कैकेयी ने धीमे-धीमे कहा।

भरत ने और चकित होकर पूछा, ''क्या? क्या राम वनवास चले गये? क्यों? किसने उन्हें वनवास के लिए भेजा? राम ने क्या पाप किया था? वे तो कोई खराब काम नहीं करते हैं? प्राणहत्या के अपराधी की तरह उनको बनवास का दण्ड क्यों दिया गया? बात क्या है?''

''ऐसी कोई बात नहीं। जब मुझे मालूम हुआ कि राजा उसका पट्टाभिषेक करना चाहते हैं, तो मैंने दो वर माँगे जो उन्होंने देवासुर संग्राम के समय मुझे देने का वचन दिया था। वे यह कि तेरा पट्टाभिषेक हो और राम को बनवास के लिए भेज दिया जाये। महाराज मान गये। बसिष्ठ आदि जो कुछ करना है वह सब कर देंगे। तुम चुपचाप से अपना पट्टाभिषेक करवा लो।'' कैकेयी ने कहा।

कैकेयी की ये बातें सुनकर भरत माँ पर क्रोधित हो गया। उसने उसे बुरा भला कहा, ''तुमने अपने पति को मारा है। राम को वन में

भेजा है। तुम्हारा मुँह देखना ही पाप है। क्या तुम नहीं जानते कि क्षत्रिय वंश का धर्म है कि ज्येष्ठ पुत्र का ही पट्टाभिषेक हो। राम और लक्ष्मण के बिना मैं यहाँ राज्य भार कैसे ले सकूँगा? मैं अब जाकर राम को बुलाऊँगा, उनका राज्याभिषेक करके मैं उनकी सेवा करूँगा।''

उसने अपनी माँ से कहा। उसने यह भी कहा, ''जाओ, आग में कूदो, नहीं तो स्वयं जंगल में जाकर रहो। यह भी न हो तो अपना गला घोंटकर मर जाओ।''

''क्या कह रहे हो भरत! लेकिन यह सब तो मैंने तुम्हारे ही लिए किया है। शान्ति से सोचो जरा। तुम सम्राट बनोगे। राज-सुख भोगोगे। सर्वत्र तुम्हारा यश फैलेगा। यदि राम राजा बन जाता तो राज-सुख तुम्हारे लिए सपना ही रह जाता। तुम राम के सेवक बनकर रह जाते और मैं कौशल्या की दासी। अब तुम राजा बनोगे और मैं राजमाता। मैं एक माँ हूँ। हर माँ अपने पुत्र को महान बनाने का सपना देखती है। मेरा भी एक सपना था कि मेरा पुत्र चक्रवर्ती सम्राट हो। क्या ऐसा करके मैंने कोई पाप किया है कि मुझे तुम इस तरह दुत्कार रहे हो।'' कैकेयी यह कहते हुए फूट-फूटकर रोने लगी।

उसने फिर कहा, ''हाय! मेरा तो भाग्य ही फूट गया। जिसके लिए मैंने पूरे राज्य का कोप झेला, वही मेरे प्रतिकूल हो गया।''

''लेकिन माँ'', भरत क्रोध में पागल होकर कैकेयी को फटकारता हुआ फिर बोला, ''एक बार मेरे हृदय की बात तो समझने की कोशिश करती। क्या तुम नहीं जानती थी कि मैं राम का कितना सम्मान करता हूँ। क्या तुम्हें विश्वास था कि राम के रहते मैं राजा बनना चाहूँगा? और तुम तो स्वयं राम को मुझसे अधिक प्यार करती थी। फिर तुमने उस भगवान तुल्य भाई को जो सबके नयनों का तारा था, क्यों वनवास भेज दिया? तुमने यह क्या किया माँ? मुझे तो तुम्हें माँ कह कर सम्बोधन करते हुए लज्जा आ रही है। हाय! यह भाग्य का कैसा क्रूर खेल है!''

इतने में मन्त्री वहाँ आये। भरत ने उनसे साफ़ साफ़ कहा कि वह राज्य नहीं चाहता। उसने अपनी माँ से कभी नहीं कहा था कि वह राज्य चाहता है। उससे वर माँगने के लिए भी नहीं कहा था।

सीता, राम और लक्ष्मण के वन चले जाने के बारे में वह और शत्रुघ्न चूँकि दूर देश में थे, बिलकुल नहीं जानते थे।

फिर भरत और शत्रुघ्न कौशल्या के पास गये। उसका आलिंगन करके वे भी उसके साथ रोये। जब वह भरत को जो कुछ कैकेयी ने किया था, सुना रही थी तो भरत को लगा कि वह कैकेयी के साथ मिल गई थी। उसने रो रोकर कहा कि वह राम के वनवास के लिए कभी नहीं मानी थी। कौशल्या ने उसको आश्वासन दिया।

दुखी भरत से वसिष्ठ ने कहा, "बेटा, यह शोक छोड़ो, महाराजा दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया करो।"

रसायनों में से निकाले हुए पिता के शरीर को देखकर भरत बहुत रोया, "पिता जी, आप स्वर्ग सिधार गये, राम वन में हैं, मैं कैसे यह राज्य भार वहन कर सकूँगा।"

दशरथ को पालकी में बिठाकर नगर के बाहर ले गये। शव के आगे-आगे नागरिक चाँदी, सोना, सिक्के, चन्दन, धूप बत्ती आदि लेकर चल रहे थे। दशरथ की पत्नियाँ पालकियों में गईं। शव को चिता पर रखने के बाद दशरथ की पत्नियों ने भरत के साथ चिता की प्रदक्षिणा की। भरत के चिता पर आग लगाने के बाद नगरवासी वापस चले आये।

भरत ने पिता के लिए दस दिनों तक शोक मनाया। फिर दो दिनों तक श्राद्ध करवाया। ब्राह्मणों को उसने अन्नदान, वस्त्रदान आदि दान किये। तेरहवें दिन भरत जब अस्थि संचयन के लिए गया तो वह और उसके साथ शत्रुघ्न पिता को याद करते करते बहुत रोये।

फिर एक जगह बैठकर भरत और शत्रुघ्न बातें करने लगे। शत्रुघ्न आश्चर्य प्रकट रहा था कि क्यों नहीं भाई लक्ष्मण ने पिता को ऐसा करने से रोका।

इतने में मन्थरा, महारानी की तरह अपने को सजाकर बन्दरनी की तरह वहाँ आयी।

द्वारपालक उसको पकड़कर शत्रुघ्न के पास लाये। "ये लीजिये, सब पापों का मूल कारण मन्थरा।" शत्रुघ्न क्रोध में उसको मारने के लिए तलवार खींचने लगा। मन्थरा के साथ जो दासियाँ थीं वे डर गईं और कौशल्या के पास भागी भागी चली गईं।

मन्थरा जोर-जोर से चिल्लाने लगी। कैकेयी जब मन्थरा को छुड़ाने के लिए आयी तो शत्रुघ्न

ने उसको खूब गालियाँ दीं। तब कैकेयी जाकर भरत को बुलाकर लायी।

भरत ने शत्रुघ्न से पूछा, "क्या स्त्री को मारोगे? यदि यह बात राम को मालूम हुई तो क्या कभी वे हमारा मुख देखेंगे? कहीं राम को गुस्सा न आ जाये, इसलिए मैंने कैकेयी को नहीं मारा, नहीं तो कभी का उसे मार चुका होता। उस कुबड़ी को छोड़ दो।"

दशरथ के मरने के चौदहवें दिन सवेरे नगर के बड़े लोगों ने आकर भरत से कहा, "राज्य का कोई नेता नहीं है। सौभाग्यवश अराजकता नहीं शुरू हुई है। आपको तुरंत पट्टाभिषेक कर लेना चाहिए।"

भरत ने उनसे कहा, "हमारे वंश की यह परम्परा है कि ज्येष्ठ पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी हो। इसलिए आपका मुझे राजा बनाने की चेष्टा करना उचित नहीं है। केवल इसलिए कि यह मेरी माता की इच्छा है, मैं मुकुट नहीं पहनूँगा। मैं जंगल में जाकर अपने बड़े भाई राम को राजा बनाकर लाऊँगा और उनके बदले मैं स्वयं अरण्यवास करूँगा। क्योंकि राज्याभिषेक वन में ही होगा, इसलिए आवश्यक सामग्री लेकर सभी सेनाओं को मेरे साथ जाने की व्यवस्था की जाये।"

भरत की यात्रा के लिए बड़ी तैयारियाँ होने लगीं। वन में पेड़ों को काटकर रास्ता बनाया गया। नदियों पर पुल बनाये गये। रास्ते में जो गढ़े आदि थे उनको भर दिया गया। जगह जगह कुएँ खोदे गये। अच्छी जगह देखकर वहाँ शिविर बनाये गये। घर और गलियाँ बनाई गईं। इस तरह के शिविर सरयू नदी के किनारे से लेकर गंगा के किनारे तक बनाये गये।

उस दिन रात को शंख निनाद, भेरी नाद, स्तोत्र आदि सुनकर भरत उठा और उसकी आँखों में पानी आ गया। उसने कहा, "मैं राजा नहीं हूँ। मेरे लिए स्तोत्र की आवश्यकता नहीं, न मंगल वाद्यों की ही।"

वसिष्ठ अपने कर्मचारियों के साथ राजसभा में भरतका पट्टाभिषेक कराने के लिए आये। उन्होंने नगर प्रमुख, मन्त्री, गणनायक, भरत और शत्रुघ्न आदि को बुला लाने लिए दूत भेजे। सब ने आकर जल्दी ही सभा को सुशोभित किया। सभा को देखकर ऐसा लगता था, जैसे दशरथ अभी जीवित ही हों।

सभासदों के समक्ष वसिष्ठ ने भरत से राज्याभिषेक करने के लिए निवेदन किया। भरत ने वही फिर कहा, जो वह पहले नागरिकों से कह चुका था। "मैं आप सब के सामने राम को फिर वापस लाने का यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा। अगर वे नहीं आये तो मैं भी लक्ष्मण की तरह वन में ही रह जाऊँगा। मेरे प्रयाण के लिए पहले ही तैयारियाँ हो चुकी हैं। मार्ग निर्माता, मार्ग रक्षक पहले ही जा चुके हैं। मेरा ही जाना बाकी है।"

यह सुन सब को सन्तोष हुआ। यात्रा के लिए सेना को सन्नद्ध करने हेतु सुमन्त्र ने सेनाध्यक्ष को आदेश दिया। अयोध्या नगरी में फिर प्राण संचरित होने लगे।

अगले दिन भरत सवेरे ही उठकर निकल पड़ा। उसके साथ नौ हज़ार हाथी, साठ हज़ार रथ, एक लाख घोड़े और योद्धा थे।

कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी भी अपने - अपने अलग वाहनों में निकलीं। कैकेयी पर जो भूत सवार था, वह उतर गया था। वह अपने किये पर पश्चाताप कर रही थी। वह औरों से आगे निकली।

जनता झुण्डों में भरत के पीछे निकली। जो राम को चाहते थे, ऐसे व्यापारी वगैरह लोग,उनको देखने के लिए निकल पड़े। हज़ारों ब्राह्मण बैल गाड़ियों पर सवार होकर भरत के साथ साथ यात्रा करने लगे।

इतनी बड़ी सेना लेकर भरत गंगा के किनारे शृंगिबेरपुर के पास पहुँचा। उसने अपनी सेना को नदी के किनारे जहाँ तहाँ पड़ाव करने के लिए

कहा। उसने मन्त्रियों से कहा, ''आज रात को हम यहाँ विश्राम करेंगे। कल गंगा पार करेंगे। मैं अब नदी में उतरकर पिता का तर्पण करूँगा।''

महासमुद्र-सी सेना को गंगा तट पर पड़ाव करते गुह ने देखा। रथ से उसने पहचान लिया कि वह भरत का रथ है। उसने अपने विश्वासपात्रों को बुलाकर कहा, ''भरत इतनी बड़ी सेना लेकर क्यों आया है? कहीं राम वनवास से वापस आकर फिर राज्य न माँगे, इसलिए उसे वन में ही मारने के लिए आया है क्या? हमें जैसे भी हो, राम की रक्षा करनी है। वह मेरा मित्र है। इसलिए पाँच सौ नौकाओं को तैयार रखने के लिए कहो। एक - एक नौका में सौ-सौ आदमी रखो और गंगा के आर पार इन नौकाओं को रखो। नौकाओं में अस्त्र व आहार पदार्थ रखो। भरत यदि राम की हानि नहीं करना चाहे तो उन्हें नदी पार करने दो, नहीं तो हम उन्हें रोकेंगे।''

गुह यह सब व्यवस्था करके मछलियाँ, माँस और शहद उपहार में लेकर भरत के पास गया। गुह को आता देख सुमन्त्र ने भरत से कहा, ''आपको देखने के लिए जंगलियों का राजा गुह आ रहा है। वह बलवान है, समर्थ है और राम का अच्छा मित्र है। यदि उसका उचित आदर किया गया तो राम का पता मिल सकेगा।''

''तो उस गुह को तुरंत मेरे पास बुलाओ।'' भरत ने सुमन्त्र को भेजा। गुह ने भरत के पास आकर अपने लाये हुए उपहार दिये। ''यदि मुझे पहले पता लगता कि आप आ रहे हैं, तो आपका स्वागत करता और अच्छा आतिथ्य करता। आज रात हमारा आतिथ्य स्वीकार करके कल आगे जाइये।''

भरत ने गुह से इस प्रकार कहा, ताकि उसको सन्तोष हो, ''राजा, तुम इतनी बड़ी सेना का आतिथ्य करना चाहते हो, इससे अधिक गौरव की बात हमारे लिए क्या हो सकती है? हमें भरद्वाज मुनि के आश्रम में जाना है, क्या हमें रास्ता बता सकोगे? सुनता हूँ यहाँ से रास्ता बहुत कठिन है।''

''बाण लेकर हमारे लोग आपके साथ आयेंगे। मैं भी साथ होऊँगा। इसलिए आपको रास्ता ढूँढ़ने की आवश्यकता ही न होगी।'' गुह ने कहा।

सबसे ख़राब धंधा

पुराने जमाने की बात है। वैशाली नगर में सोमगुप्त नामक एक व्यापारी था। व्यापार के द्वारा सोमगुप्त पर्याप्त मात्रा में धनार्जन कर लेता था, मगर वह उस छोटे से व्यापार से संतुष्ट नहीं था। वह बहुत जल्द करोड़पति बन जाना चाहता था। इसके वास्ते उसने एक दूसरा पेशा अपनाने का संकल्प किया। पर वह यह निश्चय न कर पाया कि कौन-सा पेशा सबसे ज़्यादा लाभदायक होगा? उन्हीं दिनों एक लखपति के घर में चोरों ने डाका डाला और कीमती सोना-चाँदी व दो-चार लाख नक़द भी चुरा ले गये। सोमगुप्त को लगा कि ऐसी एक बड़ी चोरी ज़िंदगी में सिर्फ़ एक दफ़ा कर ले तो शेष सारी ज़िंदगी आराम से काटी जा सकती है। इस पेशे में एक पैसे की भी पूँजी लगाने की ज़रूरत नहीं है।

इस विचार के आते ही सोमगुप्त ने चोरों के साथ परिचय तथा उस पेशे के सारे रहस्यों की जानकारी प्राप्त करनी चाही। उसने बड़े प्रयास के बाद यह जान लिया कि रात के वक़्त चोरों का दल कहाँ पर इकट्ठा होता है। सोमगुप्त संध्या के समय उजड़े मंदिर के पास पहुँचा और मंदिर के एक चबूतरे पर लेटकर सोने का अभिनय करते चोरों का वार्तालाप सुनता रहा। उसने अनुभव किया कि चोरी करने के लिए अत्यंत साहस और दूरदृष्टि की आवश्यकता है।

प्रतिदिन सोमगुप्त को चबूतरे पर लेटकरसोते चोरों ने देखा और सोचा कि यह कोई अनाथ होगा, कभी ज़रूरत के वक़्त इसकी मदद भी ली जा सकती है।

एक दिन आधी रात को दो चोर दो बहंगियाँ उठाकर ले आये। उनमें एक बड़ा था और दूसरा छोटा था। छोटे चोर ने सोमगुप्त को जगाकर समझाया, "सुनो भाई, आज हमारा एक साथी नहीं आया है, तुम हमारे साथ चलोगे तो चोरी के

एक किसान के रूप में बदल डाला था। उस रूप में उसकी पत्नी भी उसे पहचान न सकती थी।

यों सोचते सोमगुप्त रास्ते पर बढ़ा जा रहा था। रास्ते में एक कुत्ता लेटा हुआ था। उस पर सोमगुप्त ने अपना पैर रखा। फिर क्या था, वह ज़ोर-शोर से भूँकने लगा। सोमगुप्त घबरा गया, उसने चीख़कर हाथ के गुड़ के टुकड़े गिरा दिये। कुत्ता भूँकना बंद करके गुड़ के टुकड़ों को चाटने लगा।

बड़े चोर ने सोमगुप्त के हाथ गुड़ के और थोड़े टुकड़े देकर समझाया, "दोस्त! हम लोग चोरी करने जा रहे हैं, शादी की दावत उड़ाने के लिए नहीं; तुम्हें और सावधान रहना होगा।"

छोटे चोर ने कहा, "सुनो भाई, कुत्ते का भूँकना और तुरंत मुँह बंद करना सुनकर कोतवाल समझ जायेगा कि कहीं दाल में कुछ काला है। वह ज़रूर इस ओर आ धमकेगा। नाना प्रकार के सवाल पूछेगा। तुम अपना मुँह मत खोलो। उसके सारे सवालों का जवाब मैं ख़ुद दूँगा।"

छोटे चोर की कल्पना के मुताबिक़ कोतवाल घोड़े पर उधर से आ निकला। उसने गरजकर पूछा, "तुम लोग कौन हो? यह नहीं जानते कि आधी रात के वक़्त गलियों में घूमना मना है। सच कहो, इतनी रात गये तुम लोग किस काम से निकले हो?"

कोतवाल की कड़कती आवाज़ सुनने पर सोमगुप्त के कलेजे में धड़कन होने लगी।

'छी छीः, प्रत्येक पल प्राणों को हथेली में

माल में से तुम्हें भी थोड़ा-बहुत हिस्सा देंगे। तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं कि हमारा काम तुम न कर सकोगे। तुम हमारे कहे अनुसार करते जाओ, बस, तुम्हें बचाने की जिम्मेदारी हमारी है।"

सोमगुप्त ऐसे ही मौक़े के इंतज़ार में था, इसलिए उसने झट से मान लिया।

चोरों ने सोमगुप्त का वेष बदल डाला, उसका कुर्ता खोल दिया, उसके सिर पर पगड़ी बांध दी। चेहरे पर काला रंग पोत दिया, छोटी-सी दाढ़ी चिपका दी।

धोती सिर्फ़ घुटने तक पहना दी। हाथ में एक लाठी थमा दी, सिर पर एक बोरा रखा, हाथ में गुड़ के सात-आठ टुकड़े देकर कहा, "अब चलो हमारे साथ।"

सोमगुप्त जानता न था कि चोरी करने के लिए ऐसी पूर्व तैयारी भी करनी होती है। चोरों ने उसे

रखकर जीनेवाला यह कैसा पेशा है? चाहे इस पेशे में भले ही ज़्यादा मुनाफ़ा क्यों न हो? इसके पूर्व इस कोतवाल को क्या, इससे भी बड़े अधिकारी को देख मैं कभी डरा नहीं था?' सोमगुप्त ने मन में सोचा।

छोटे चोर ने कोतवाल से कहा, ''हम रामापुर के निवासी हैं सरकार! गुड़ बेचने के ख़्याल से बहंगियों में लेके आये, इस अंधेरे में हमें सराय के रास्ते का पता न चला। इसीलिए भटक रहे हैं, आप मेहरबानी करके रास्ता बताकर पुण्य लूटिये।''

''सराय का रास्ता बता दूँगा, पहले तुम लोग अपने नाम बतला दो। यह तोंदवाला कौन है? यह तो मेहनत करनेवाला जैसा नहीं लगता।'' कोतवाल ने व्यापारी की ओर देखते हुए पूछा। व्यापारी को लगा कि उसके प्राण उड़े जा रहे हैं।

''मेरा नाम रंगदास है, ये मेरे भाई भीमदास हैं और ये व्यापारी मंगाराम हैं, बिना मेहनत किये मुनाफ़ा पाकर तोंद बढ़ा ली है।'' छोटे चोर ने जवाब दिया।

कोतवाल हँस पड़ा। सराय का रास्ता दिखाकर बोला, ''एक घड़ी के अंदर मैं सराय में आ जाता हूँ, मैं देखूँगा, तुम तीनों वहाँ पर हो कि नहीं। खबरदार! जाओ।'' तीनों के दिल हलके हुए, तब ख़ुशी-ख़ुशी चोरी करने चल पड़े।

व्यापारी के मन में अब तक चोर के पेशे के प्रति पूर्ण रूप से घृणा पैदा हो गई। पल-पल पर

डरना पड़ता है, क़दम-क़दम पर झूठ बोलना पड़ता है। चोरी करने के पहले अगर यह हालत है तो इस पेशे को अपनाने के बाद पूर्ण रूप से मानसिक शांति जाती रहेगी। इस पेशे में बिलकुल प्रवेश नहीं करना है, किसी भी उपाय से यहाँ से बचकर भागना है। व्यापारी ने अपने मन में सोचा।

इसके बाद तीनों जाकर एक बड़े मकान के सामने जा रुके। उसी घर में वे लोग डाका डालना चाहते थे।

''मैं ताला तोड़ दूँगा। हम दोनों अंदर जाकर माल लेकर आयेंगे, तब तक ये बुजुर्ग बाहर पहरा देते रहेंगे।'' यों आपस में सलाह करके चोरों ने ताला तोड़कर अंदर प्रवेश किया।

तभी व्यापारी वहाँ से चलकर अपने घर पहुँचा। वह गली का नुक्कड़ पार कर ही रहा था कि तभी उसने देखा, राजभट एक चोर को बन्दी बनाये कोड़े मारते ले जा रहे हैं।

चोर के पीछे उसकी पत्नी और बच्चे रोते-चिल्लाते जा रहे हैं। इसे देख ग्रामवासियों में से किसी ने भी उनके प्रति सहानुभूति न दिखाई।

व्यापारी के मन में उस चोर के प्रति अगाध सहानुभूति पैदा हुई। उसने सोचा, 'न मालूम यह कैसा पेशा है! चोर हाथ में आ जाता है तो उसे चाहे जो भी दण्ड दिया जाये, समाज उसका समर्थन करता है। यदि मैं भी पकड़ा जाऊँ तो मेरी भी हालत यही होगी न?'

इसके बाद पिछवाड़े के रास्ते से उसने अपने घर में प्रवेश किया, अपना वेश बदल लिया, हाथ-मुँह धोकर शांत मन से अपने घर के चबूतरे पर जा लेटा।

सवेरा होते ही व्यापारी की पत्नी ने उसे जगाया और बताया कि आधी रात के बाद दो चोरों को भागते देख कोतवाल ने उनका पीछा किया और तलवार से उन्हें मार डाला।

व्यापारी ने मन ही मन सोचा, 'भगवान ने मुझे इस खराब धन्धे से बचा लिया। मैं अब कोई और धन्धा नहीं करूँगा और अपने छोटे व्यापार में ही सन्तोष करूँगा। ठीक कहा गया है - सन्तोष से बड़ा कोई धन नहीं।'

अपराजेय गरुड़

चन्द्रपुरी में अप्रत्याशित घटनाओं के कारण विवाह और राजतिलक दोनों स्थगित कर दिये गये। कुछ शाही मेहमानों ने वापस जाने का निश्चय कर लिया, जैसे- वज्रपुरी के राजा। राजगुरु और ज्योतिषी समारोहों के लिए नई तिथियाँ निश्चित करने हेतु पधारते हैं।

पर्वत की गुफाओं में रवीन्द्रदेव परेशान नजर आता है।

एक आदिवासी युवक अन्दर आता है।

जब तक रवीन्द्रदेव घाटी में पहुँचता है तब तक दोनों व्यक्ति घोड़े से उतर चुके होते हैं।

मेरे अच्छे दोस्त कहाँ हैं? जानते हो न, हम दोनों सहपाठी थे।

जानता हूँ। मेरे पिता भी आप से मिलने के लिए बेचैन हैं।

नरेन्द्रदेव अपना दुख छिपाता है।

तुम्हें मुझसे मिलने के लिए गुफा में आने की तकलीफ नहीं उठानी चाहिये थी।

आदित्य का विवाह स्थगित हो गया है?

विवाह और राजतिलक स्थगित हो गये हैं। इसलिए लौटते समय मैंने तुमसे मिल लेने का निश्चय किया।

हाँ, उसकी दुल्हन अचानक बीमार हो गई।

उस दिन एक आदिवासी स्त्री आप के साथ गई थी।

मैंने उसे महल के फाटक पर छोड़ दिया। उसके बाद मैंने उसे नहीं देखा।

नरेन्द्र, मैंने राजा महेन्द्रवर्मा से तुम्हें चन्द्रपुरी वापस बुलाने के लिए अनुरोध किया है। लेकिन वह अड़ियल है। तुम्हारे बेटे के प्रति कुछ शिकायत है, हालांकि वह रानी का भतीजा है।

सूर्यास्त तक, विक्रमसिंह तथा पुष्पराज गुफा से विदा लेकर अपने दल में शामिल होते हैं।

रवीन्द्रदेव को सुनाई पड़ता है कि कोई उसे पुकार रहा है।
क्या यह आम पुरुष है?
क्या उन्होंने कोई खबर दी?
अच्छी खबर है!
विवाह नहीं हो सका। क्या आदिवासी स्त्री लौट आई?
नहीं, वह तभी लौटेगी जब वह हमारे गुरु द्वारा उसे दिया गया कार्य सम्पन्न कर लेगी।
आम पुरुष ने दो घुड़सवारों को देखा है।
वे कौन थे? एक प्रधान मंत्री था।
दूसरा, राजा विक्रमसिंह था। वह मेरे पिता से मिलना चाहता था।
समारोह स्थगित हो गये हैं। कौन जानता है कि वह कभी होगा भी?
क्या आदित्य को कुछ हो जायेगा?
या स्वयं राजा को ही कुछ होगा?
तुम बहुत अधीर हो, रवीन्द्रदेव! और तुम्हारे सवालों को मैं पसन्द नहीं करता।
चन्द्रपुरी में।
महाराज आपसे तुरन्त मिलना चाहते हैं। जब मैं राजगुरु तथा ज्योतिषी की प्रतीक्षा कर रहा था, तब रक्षकों से मालूम हुआ कि कल एक आदिवासी स्त्री महल में घुस गई थी और वह अरुणा के कमरे में चली गई थी।
वह कौन थी, रामसिंह? वह महल में कैसे आई?

रक्षकों ने मुझे कहा कि वह बज्रपुरी के प्रधानमंत्री के साथ आई थी।
लेकिन अरुणा के कक्ष में जाने में वह कैसे सफल हो गई?
रक्षकों ने उसे और मंत्री को द्वारमण्डप तक जाते देखा था। उसने मार्ग का पता कर लिया होगा।
उसी ने अरुणा के कमरे में संकट पैदा किया होगा।
कुछ आदिवासी जादू-टोना में माहिर होते हैं। क्या वह बज्रपुरी के राजा के साथ चली गई?
रक्षकों का कहना है कि वह उनके साथ नहीं थी।
हे भगवान! तब तो वह अवश्य ही अभी तक कहीं न कहीं महल में ही होगी।
पहले से ही उसकी खोज जारी है। और मैंने रक्षकों को कह दिया है कि वे यदि उसे फाटक पर देखें तो रोक लें।
आदित्य और रामसिंह ने देखा कि राजगुरु और ज्योतिषी अभी तक राजा के साथ हैं।
मैंने बहुत सावधानी से विचार करने के बाद दो तिथियों का चुनाव किया था। और उसमें कोई बाधा दिखाई नहीं पड़ी!
ज्योतिषी जी, कहीं ऐसा तो नहीं है कि राजा के लिए यह अशुभ समय चल रहा है। याद है, एक साल पहले उन्हें राजधानी से दूर रहना पड़ा?
सच है। हमलोगों ने उस सम्भावना पर विचार नहीं किया। ज्यतिपी जी, आप शीघ्र ही मेरी जन्मकुण्डली का ध्यान से अध्ययन कीजिये।
राजा की इच्छा के अनुसार ही हमलोग करें।
क्या वह आवश्यक होगा? वे अभी भी हमारे राजा हैं।
(क्रमशः)

भारत की सांस्कृतिक घटनाएँ

कुरुक्षेत्र पर्वोत्सव

हरयाणा स्थित कुरुक्षेत्र को दो घटनाओं के लिए याद किया जाता है: इसी स्थान पर कौरवों और पाण्डवों के बीच वीर गाथा-युद्ध हुआ था; युद्ध आरम्भ करने के लिए शत्रुओं द्वारा शंखनाद करने से पूर्व, पां राजकुमार अर्जुन ने यह सन्देह व्यक्त किया कि क्या अपने बन्धुओं तथा गुरुजनों, जैसे भीष्म और द्रोणा साथ सचमुच युद्ध करना चाहिये। तब सारथी भगवान श्री कृष्ण को उसे जगाने के लिए उद्‌बोधन करना पड़ा जिसे हिन्दू आदर के साथ भगवद् गीता कहते हैं।

कुरुक्षेत्र को इसलिए गीता का जन्मस्थान माना जाता है और एक सप्ताह का कुरुक्षेत्र पर्वोत्सव गीता जयन्ती के स्मरण में मनाया जाता है।

इस वर्ष यह पर्वोत्सव एक दिसम्बर से सात दिसम्बर तक मनाया जायेगा, जिसमें देश भर से हजारों तीर्थयात्री आयेंगे। पर्वोत्सव के अवसर पर कुरुक्षेत्र की तीर्थयात्रा को एकस्मरणीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव माना जाता है।

भगवद् गीता हिन्दुओं के लिए पावनतम ग्रंथ माना जाता है। यह ग्रंथ इस आधारभूत सत्य के बारे में बताता है कि जीवन-शैली चाहे जैसी हो, पूजा की पद्धति चाहे जैसी भी हो, जब तक सर्व जन हिताय सच्ची शुभ कामना से वह मार्गदर्शित होता है, इसे मान्यता और मान दिया जाना चाहिये।

तीर्थयात्री पावन ब्रह्म सरोवर और सन्नेहित सरोवर में अवश्य स्नान करते हैं। सातों दिनों तक गीता के श्लोकों का वाचन, इसकी शिक्षाओं पर प्रवचन, महाभारत की कथा, भजन, नृत्य, महाभारत के दृश्यों के अभिनय आदि आयोजित किये जायेंगे।

भगवान बुद्ध तथा दसों सिक्ख गुरुओं ने इस पावन स्थलों के दर्शन किये थे।

न्यूट्रिन प्रश्नोत्तरी-३
उत्तर:

१. आ) मध्यप्रदेश २. अ) नर्मदा

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

रंग द्वारा रक्षा

यदि किसी मनुष्य की आँखें लाल हों तो हर व्यक्ति उससे दूर रहना चाहता है, क्योंकि हो सकता है वह कंजंक्टिवाइटिस का मरीज़ हो जो संक्रामक रोग है। जब मेढ़क की आँखें लाल हों तब कुछ प्राणी भी उससे दूर रहते हैं। अन्तर इतना हैकि मेढ़क से दूर रहनेवाले प्राणी परभक्षी होते हैं जिनसे वह स्वयं भी बचना चाहता है। लाल आँखोंवाला ट्री फ्रॉग, जो सेन्ट्रल अमेरिका के बरसाती जंगलों का मूलवासी है, शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिए अपने तेज चमक वाले शरीर और आँखों का उपयोग करता है। इस प्राणी का शरीर चमकीले हरे रंग का होता है, जिस पर दोनों ओर नीली और पीली धारियाँ होती हैं और इसकी आँखें चटकीली लाल रंग की होती हैं। इसकी एक तीसरी पलक होती है जो दृष्टि को बाधित किये बिना अन्यथा संवेदनशील आँख की रक्षा करती है।

ये रात्रिचर प्राणी अपने शरीर के रंग का उपयोग छद्मावरण तथा "भयप्रद साधन" के रूप में भी करते हैं। अपनी त्वचा के रंग के कारण, यह वृक्ष की शाखाओं की छतरी के साथ अच्छी तरह मेल खाता है, जहाँ यह अपने प्रौढ़ जीवन का अधिकांश समय बिताता है। इसके अतिरिक्त, त्वचा का रंग प्राकृतिक रूप से हलका या गाढ़ा होता है।

तुम्हारा प्रतिवेश

सब्जियों के सिद्ध

प्रत्येक वर्ष दुनिया भर के सैकड़ों किसान अपने-अपने दीर्घाकार कद्दू का प्रदर्शन करने के लिए एकत्र होते हैं। प्रत्येक को यही आशा रहती है कि उसका फल दूसरों से अधिक भारी होगा। वे सब विश्व के सबसे अधिक वजनदार कद्दू उत्पादन प्रतियोगिता के प्रतियोगी हैं। ओरगन के एक किसान स्टिव डलटेटस ने ६२८ किलो का कद्दू पैदा करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। लॉग आइलैण्ड में ग्रेट पम्पकिन्स कॉमनवेल्थ वे ऑफ के कॉर्डिनेटर ऐन्ड्रिव सैबिन का कहना है कि बृहदाकार कद्दू का उत्पादन आसान काम नहीं है। इसमें अत्यधिक कठिन परिश्रम और समर्पण की भावना की आवश्यकता होती है। सब्जी की देखभाल हर रोज करनी पड़ती है। विश्व के सबसे अधिक दीर्घाकार गाजर का वजन ९ किलो, सेब का २ किलो तथा पत्तागोबी का ५६ किलो था।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

हिचकी

कहा जाता है कि हँसना सर्वोत्तम औषधि है। आजकल ''हँसी चिकित्सा'' के बारे में भी सुनते हैं। हँसी विश्राम देती है और तनाव कम करती है। किन्तु अधिक हँसी भी खतरनाक सिद्ध हो सकती है। अधिक हँसने से डाइअफ्रैम अचानक सिकुड़ जाता है जिससे स्वरतन्त्रियाँ बन्द हो जाती हैं। परिणाम स्वरूप हिचकी आने लगती है। हिचकी का सरल उपचार है श्वास को रोक कर रखना। इससे कार्बन डायोक्साइड गैस बनती है जो हिचकी को रोकती है। अमेरिका के आयोवा का चार्ल्स ओसबॉर्न एक मिनट में ४६ बार हिचकी लेने लगा और ६९ घण्टों तक हिचकी लेता रहा। यह विश्व कीर्तिमान है।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

क्या उनके उद्धरणों से हम अपने कुछ नेताओं को पहचान सकते हैं?

१. ''मनुष्य में पहले से ही निहित पूर्णता को शिक्षा कहते हैं।'' यह किनका कथन है?

२. यह किसने कहा है: ''शक्ति, शारीरिक क्षमता से नहीं, बल्कि दुर्दमनीय संकल्प से आती है।''

३. ''दुर्बल व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर सकता। क्षमा शक्तिशाली का गुण है।'' यह किसका उद्धरण है?

४. ''खेल-भावना के साथ खेलने के लिए'' किसने सलाह दी?

५. यह किनका कथन है, ''ज्ञान अपने मस्तिष्क के किसी कोने में गट्ठर बनाकर रखने के लिए नहीं है।''

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

KALANIKETAN BALU

KALANIKETAN BALU

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर
१००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

मुकेश जैन
सी-२६, कनाट प्लेस
नई दिल्ली-११० ००१

विजयी प्रविष्टि

पापा आओ, सैर कराओ ;
पहले मुझको दूध पिलाओ।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तरः

१. स्वामी विवेकानन्द।
२. महात्मा गाँधी।
३. रवीन्द्रनाथ ठाकुर।
४. जवाहरलाल नेहरू।
५. डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन्।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

कुकिंग गैस का मितव्यय कैसे करें?

बृन्दा उलझन में थी। उसका गैस सिलेण्डर खत्म होनेवाला था। गैस-रिफिल का अभाव चल रहा था और एजेंसी ने एक सप्ताह से पहले देने से इनकार कर दिया था। उसे पहले ही अपने बच्चों, पति तथा ससुराल के अन्य सदस्यों के लिए खाना बनाने में काफी मुश्किल हो रही थी। अब उसके चाचा और चाची भी आ गये थे। उसे चाची को विश्वास में लेने का निश्चय किया। ''तुम चिन्ता न करो, बृन्दा'', चाची ने कहा। ''मैं कुकिंग संभाल लूंगी।''

उसकी चाची ने रसोई का पूरा भार ले लिया। वह दिन शान्ति से बीत गया। दूसरा दिन। बृन्दा को चाची से बुरी खबर की उम्मीद हो रही थी, परन्तु ऐसा कुछ न हुआ। बृन्दा उससे पूछने गई। ''बृन्दा!'' उसकी चाची ने कहा। ''मैं उन सारे तरीकों का पालन करती रही जो तुम गैस के किफायत खर्च के लिए करती हो। मैंने कुछ और भी किया जिसे तुमने अनदेखा कर दिया था। परिवार की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन बनाने में तुम तीन या चार बार खाना पका रही थीं। उसके बाद बार-बार खानों को गरम भी कर रही थी। इसके अतिरिक्त, तुम रसोई में उपलब्ध बर्तनों का प्रयोग नहीं कर रही हो। मैंने बड़े कुकर का प्रयोग कि या जिसमें मैंने एक साथ खिचड़ी, सब्जी तथा दाल बना ली। मैंने उन्हें अलग-अलग हाँड़ियों में रखा जिन्हें तुम प्रयोग में नहीं ला रही हो। मैं इस प्रकार गरम-गरम खाना खिलाती रही। इस तरह खाने को फिर से गरम करना नहीं पड़ा। आज से हमलोग सब खाना एक साथ खायेंगे। इस प्रकार हमलोग गैस का खर्च कम कर सकते हैं।''

''माई गॉड!'' बृन्दा प्रफुल्ल होकर बोली। ''यह साधारण सी बात मेरे दिमाग में पहले क्यों नहीं आई। भविष्य में भी, मैं एक बार में ही खाना बनाने की योजना बनाऊँगी और एक साथ ही भोजन करने की कोशिश करूँगी।

chandamama (Hindi) Dec. 2006 RNI No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08